इतिहास दिवाकर

त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका

वर्ष २ अंक ३ आश्विन मास कलियुगाब्द ५१११ अक्तूबर २००९

मार्गदर्शक :
ठाकुर राम सिंह
डॉ० शिवाजी सिंह
चेतराम
इरविन खन्ना

सम्पादक :
डॉ० विद्या चन्द ठाकुर

सह सम्पादक
चेतराम गर्ग

सम्पादक मण्डल :
डॉ० रमेश शर्मा
डॉ०ओम प्रकाश शर्मा
प्रो० सतीश चन्द्र
सुश्री चारु मित्तल

टंकण एवं सज्जा :
अश्वनी कालिया

सम्पादकीय कार्यालय :
ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान,
गांव—नेरी, डाकघर—खगल
जिला—हमीरपुर—१७७००१(हि०प्र०)
दूरभाष : ०१९७२—२०३०४४

मूल्य :
प्रति अंक —१५.०० रुपये
वार्षिक — ६०.०० रुपये

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

उद्बोधन

उत्तरपाड़ा भाषण	महर्षि अरविन्द	३

काल तत्त्व

इतिहास तत्त्वदर्शन और मन्वन्तर विज्ञान	वासुदेव पोद्दार	१२
Confusion in values of terms assigned in micro level of Kal Ganana	V.K.M. Puri	१७

जगत विभूति

भक्त राज शुकदेव	प्र.ग. सहस्रबुद्धे	२९

मातृ विभूति

रानी दुर्गावती	कृष्णानन्द सागर	३६

विविधा

कुल्लू के कोट एवं दुर्ग	डॉ० सूरत ठाकुर	३८

ध्येय पथ

त्रि—दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद	४६

सम्पादकीय

हिन्द स्वराज्य के 100 वर्ष

एक *पुस्तक महात्मा गांधी जी ने लिखी है – **हिन्द स्वराज्य**। यह पुस्तक मार्गशीर्ष मास, कलियुगाब्द 5011, ईस्वी सन् 1909 के नवम्बर मास में लिखी गई जिसके लेखन की शताब्दी इस वर्ष मार्गशीर्ष मास, कलियुगाब्द 5111, तदनुसार नवम्बर, 2009 में पूरी हो रही है। इस पुस्तक में स्वराज्य की व्याख्या करते हुए गान्धी जी लिखते हैं कि यदि अंग्रेज यहां से चले जाएं और उनकी सभ्यता यहां रहे तो मैं मानूंगा स्वराज्य नहीं मिला और यदि अंग्रेज यहां रहें और उनकी सभ्यता चली जाए तो मैं मानूंगा कि भारतवर्ष को स्वराज्य मिल गया है। मैकाले ने अंग्रेजी शिक्षा नीति के माध्यम से भारतवर्ष के सांस्कृतिक वैभव और यहां की युग–युगीन ऐतिहासिक राष्ट्रीय पहचान को नष्ट करने का जो प्रयास किया, उसके सम्बन्ध में गान्धी जी ने लिखा है कि हमको अंग्रेजों ने सिखाया है कि आप एक राष्ट्र नहीं थे और एक राष्ट्र बनने में आपको सैंकड़ों वर्ष लगेंगे। यह बात बिल्कुल बेबुनियाद है। जब अंग्रेज भारत में नहीं थे, तब भी हम एक राष्ट्र थे। तभी तो अंग्रेजों ने यहां एक राज्य स्थापित किया और हमारे बीच भेदभाव पैदा किया। जिन दूरदर्शी पूर्वजों ने सेतुबन्ध रामेश्वर, जगन्नाथपुरी और हरिद्वार यात्रा चलाई, आपके अनुसार इसके पीछे क्या विचार रहा होगा ? ये तो आप मानेंगे कि वे मूर्ख नहीं थे। वे जानते थे कि ईश्वर भजन घर बैठे भी होता है। उन्हीं पूर्वजों ने हमें सिखाया है कि मन चंगा तो कठौती में गंगा। लेकिन उन्होंने सोचा कि भारत की एक राष्ट्र के रूप में पहचान देशवासियों में हमेशा रहनी चाहिए। इसलिए उन्होंने अलग–अलग स्थान तय करके लोगों को एकता का विचार इस तरह दिया जो दुनिया में और कहीं नहीं दिया जाता है।*

गान्धी जी के इन विचारों में भारतवर्ष का एक प्राचीन राष्ट्र के रूप में यथार्थ चित्रण हुआ है जिसका प्रतिपादन महर्षि पराशर ने विष्णु पुराण में इस प्रकार किया है –

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।।

अर्थात् समुद्र के उत्तर में तथा हिमालय के दक्षिण में जो देश स्थित है, उस देश का नाम भारतवर्ष है, जहां भरतवंशी सन्तान निवास करती है।

*भारत के दासता–गर्वित मनोवृत्ति के अंग्रेज–परस्त लोग जो गान्धी जी के भी अनुयायी बनते हैं, वे युग–युगीन ऐतिहासिक सत्य के धरातल पर गान्धी जी के चिन्तन के इन गहन विचारों को आत्मसात् करें। यही गान्धी जी के प्रति सच्ची निष्ठा होगी अन्यथा, केवल स्वार्थ सिद्धि के लिए गान्धी भक्ति से **मज़बूरी का नाम महात्मा गान्धी** की उक्ति चरितार्थ होती है।*

विनीत,

डॉ0 विद्या चन्द ठाकुर

उद्‌बोधन

उत्तरपाड़ा भाषण

● महर्षि अरविन्द

महर्षि अरविन्द को अंग्रेज सरकार ने कलियुगाब्द 5010, मई, 1908 में बंगाल प्रान्त के अलीपुर षड्यन्त्र काण्ड के अन्तर्गत मिथ्या आरोप लगा कर जेल भेज दिया। एक वर्ष बाद कारावास से मुक्त होने के उपरान्त आज से 100 वर्ष पहले कलियुगाब्द 5011 के वर्ष में 30 मई, 1909 को उन्होंने पश्चिमी बंगाल के उत्तरपाड़ा कस्बे के अभिनन्दन समारोह में एक ऐतिहासिक भाषण दिया जिसमें उन्होंने जेल-जीवन में मिला ईश्वरीय सन्देश जनता को सुनाया। इस ईश्वरीय सन्देश में सनातन धर्म, हिन्दू धर्म और राष्ट्रीयता का सच्चा ज्ञान प्रदान किया गया है। महर्षि अरविन्द का यह भाषण उत्तरपाड़ा भाषण के नाम से प्रसिद्ध है। इसका संक्षिप्त उल्लेख इतिहास दिवाकर के पिछले अंक के सम्पादकीय में हुआ है। कुछ सुधी पाठकों ने सम्पूर्ण उत्तरपाड़ा भाषण को जानने की जिज्ञासा व्यक्त की। राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना का यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाषण बंगला में *कारा काहिनी* के नाम से प्रकाशित हुआ है जिसका हिन्दी रूपान्तर श्री अरविन्द सोसायटी पांडिचेरी द्वारा प्रकाशित किया गया है। यही हिन्दी रूपान्तर यहां यथावत् दिया जा रहा है।

– सम्पादक

जब मुझे आपकी 'सभा' के इस वार्षिक अधिवेशन में बोलने के लिए कहा गया, तो मैंने यही सोचा कि आज के लिए जो विषय चुना गया है उसी पर, अर्थात् हिंदू धर्म पर कुछ कहूंगा। मैं नहीं जानता कि उस इच्छा को मैं पूरा कर सकूंगा या नहीं; क्योंकि जैसे ही मैं यहां आकर बैठा मेरे मन में एक संदेश आया और संदेश मुझे आपको और सारे भारत राष्ट्र को सुनाना है। यह वाणी मुझे पहले-पहल जेल में सुनायी दी थी और उसे अपने देशवासियों को सुनाने के लिए मैं जेल से बाहर आया हूं।

पिछली बार जब मैं यहां आया था उसे एक वर्ष से ऊपर हो चुका है। उस बार मैं अकेला न था; तब मेरे साथ ही बैठे थे राष्ट्रीयता के एक परम शक्तिमान् दूत। उन दिनों वे

उस एकांतवास से लौटकर आये थे जहां उन्हें भगवान् ने इसलिये भेजा था कि वे अपनी कालकोठरी की शांति और निर्जनता में उस वाणी को सुन सकें जो उन्हें सुनानी थी। उस समय आप सैंकड़ों की संख्या में उन्हीं का स्वागत करने आये थे। आज वे हमसे बहुत दूर हैं, हजारों मील के फासले पर हैं। दूसरे लोग भी, जिन्हें मैं अपने साथ काम करते हुए पाता था, आज अनुपस्थित हैं। देश पर जो तूफान आया था उसने उन्हें दूर-दूर बिखेर दिया है। इस बार मैं एक वर्ष निर्जनवास में बिताकर आया हूं और अब बाहर आकर देखता हूं कि सब कुछ बदल गया है। जो सदा मेरे साथ बैठते थे, जो सदा मेरे काम में सहयोग दिया करते थे, आज बर्मा में कैद हैं; दूसरे उत्तर में नजरबन्द होकर सड़ रहे हैं। जब मैं बाहर आया तो मैंने अपने चारों ओर देखा, जिनसे सलाह और प्रेरणा पाने का अभ्यास था, उन्हें खोजा। वे मुझे नहीं मिले। इतना ही नहीं, जब मैं जेल गया था तो सारा देश वंदे मातरम् की ध्वनि से गूंज रहा था, वह एक राष्ट्र बनने की आशा से जीवित था। यह उन करोड़ों मनुष्यों की आशा थी जो गिरी हुई दशा से अभी-अभी ऊपर उठे थे। जब मैं जेल से बाहर आया तो मैंने इस ध्वनि को सुनने की कोशिश की, किंतु इसके स्थान पर छायी हुई थी निस्तब्धता। देश में सन्नाटा था और लोग हक्के-बक्के से दिखायी दिये; क्योंकि जहां पहले हमारे सामने भविष्य की कल्पना से भरा ईश्वर का उज्जवल स्वर्ग था वहां हमारे सिर पर धूसर आकाश दिखायी दिया जिससे मानवीय वज्र और बिजली की वर्षा हो रही थी। किसी को यह न दिखाई देता था कि किस ओर चलना चाहिए, और चारों ओर से यही प्रश्न उठ रहा था, "अब क्या करें ? हम क्या कर सकते हैं ?" मुझे भी पता न था कि किस ओर चलना चाहिए और अब क्या किया जा सकता है। लेकिन एक बात मैं जानता था, ईश्वर की जिस महान् शक्ति ने उस ध्वनि को जगाया था, उस आशा का संचार किया था उसी शक्ति ने यह सन्नाटा भेजा है। जो ईश्वर उस कोलाहल और आंदोलन में थे, वे ही इस विश्राम और निस्तब्धता में भी हैं। ईश्वर ने इसे भेजा ताकि राष्ट्र क्षणभर के लिए रुककर अपने अंदर खोजे और जाने कि उनकी इच्छा क्या है। इस निस्तब्धता से मैं निरुत्साहित नहीं हुआ हूं, क्योंकि कारागार में इस निस्तब्धता के साथ मेरा परिचय हो चुका है और मैं जानता हूं कि मैंने एक वर्ष की लंबी कैद के विश्राम और निस्तब्धता में ही यह पाठ पढ़ा है। जब विपिनचंद्र पाल जेल से बाहर आए तो वे एक संदेश लेकर आये थे और वह प्रेरणा से मिला हुआ संदेश था। उन्होंने यहां जो वक्तृता दी थी वह मुझे याद है। उस वक्तृता का मर्म और अभिप्राय उतना राजनीतिक नहीं था जितना धार्मिक था। उन्होंने उस समय जेल के अंदर मिली हुई अनुभूति की हम सबके अंदर जो भगवान् हैं उनकी, राष्ट्र के अंदर जो परमेश्वर हैं उनकी बात की थी। अपने बाद के व्याख्यानों में भी उन्होंने कहा था कि इस आंदोलन में जो शक्ति काम कर रही है वह सामान्य शक्ति की अपेक्षा महान् है और इसका हेतु भी साधारण हेतु से कहीं बढ़कर है। आज मैं भी आपसे फिर मिल रहा हूं, मैं भी जेल से बाहर आया हूं और इस बार भी आप ही, इस उत्तरपाड़ा के निवासी ही, मेरा सबसे पहला स्वागत कर रहे हैं। किसी राजनीतिक सभा में नहीं, बल्कि उस समिति की सभा में जिसका

उद्देश्य है धर्म की रक्षा। जो संदेश विपिनचंद्र पाल ने बक्सर जेल में पाया था वही भगवान् ने मुझे अलीपुर में दिया। वह ज्ञान भगवान् ने मुझे बारह महीने के कारावास में दिन-प्रतिदिन दिया और आदेश दिया है कि अब जब मैं जेल से बाहर आ गया हूं तो आपसे उसकी बात करूं।

मैं जानता था कि मैं जेल से बाहर निकल आऊंगा। यह वर्ष भर की नजरबंदी केवल एक वर्ष के एकांतवास और प्रशिक्षण के लिये थी। भला किसी के लिए यह कैसे संभव होता कि वह मुझे जेल में उतने दिनों से अधिक रोक रखता जितने दिन भगवान् का हेतु सिद्ध करने के लिये आवश्यक थे ? भगवान् ने कहने के लिए एक संदेश दिया है और करने के लिये एक काम, मैं जानता था कि जब तक संदेश सुनाई नहीं दिया जाता तब तक कोई मानवशक्ति मुझे चुप नहीं कर सकती, जब तक वह काम नहीं हो जाता तब तक कोई मानवशक्ति भगवान् के यंत्र को रोक नहीं सकती, फिर वह यंत्र चाहे कितना ही दुर्बल, कितना ही सामान्य क्यों न हो। अब जब कि मैं बाहर आ गया हूं, इन चंद मिनटों में ही मुझे एक ऐसी वाणी सुझायी गयी है जिसे व्यक्त करने की मेरी कोई इच्छा न थी। मेरे मन में जो कुछ था उसे भगवान् ने निकालकर फेंक दिया है और मैं जो कुछ बोल रहा हूं वह एक प्रेरणा के वश होकर, बाध्य होकर बोल रहा हूं।

जब मुझे गिरफ्तार करके जल्दी-जल्दी लालबाजार की हाजत में पहुंचाया गया तो मेरी श्रद्धा क्षणभर के लिये डिग गयी थी, क्योंकि उस समय में भगवान् की इच्छा के मर्म को नहीं जान पाया था। इसलिए मैं क्षण भर के लिए विचलित हो गया और अपने हृदय में भगवान् को पुकारकर कहने लगा, "यह क्या हुआ ? मेरा यह विश्वास था कि मुझे अपने देशवासियों के लिए कोई विशेष काम करना है और जब तक वह काम पूरा नहीं हो जाता तब तक तुम मेरी रक्षा करोगे। तब फिर मैं यहां क्यों हूं और वह भी इस प्रकार के अभियोग में ?" एक दिन बीता, दो दिन बीते, तीन दिन बीत गये, तब मेरे अंदर से एक आवाज आयी, "ठहरो और देखो कि क्या होता है।" तब मैं शांत हो गया और प्रतीक्षा करने लगा। मैं लालबाजार थाने से अलीपुर जेल ले जाया गया और वहां मुझे एक महीने के लिए मनुष्यों से दूर एक निर्जन कालकोठरी में रखा गया। वहां मैं अपने अंदर विद्यमान भगवान् की वाणी सुनने के लिए, यह जानने के लिए कि वे मुझसे क्या कहना चाहते हैं और यह सीखने के लिए कि मुझे क्या करना होगा, रात-दिन प्रतीक्षा करने लगा। इस एकांतवास में मुझे सबसे पहली अनुभूति हुई, पहली शिक्षा मिली। उस समय मुझे याद है कि गिरफ्तारी से एक महीना या उससे भी कुछ अधिक पहले मुझे यह आदेश मिला था कि मैं अपने सारे कर्म छोड़कर एकांत में चला जाऊं और अपने अंदर खोज करूं ताकि भगवान् के साथ अधिक संपर्क में आ सकूं। मैं दुर्बल था और उस आदेश को स्वीकार न कर सका। मुझे अपना कार्य बहुत प्रिय था और हृदय में इस बात का अभिमान था कि यदि मैं न रहूं तो इस काम को धक्का पहुंचेगा, इतना ही नहीं शायद असफल और बंद भी हो जायेगा; इसलिए मुझे काम नहीं छोड़ना चाहिए। ऐसा बोध हुआ कि वे मुझसे फिर बोले और उन्होंने कहा

कि, " जिन बंधनों को तोड़ने की शक्ति तुममें नहीं थी, उन्हें तुम्हारे लिए मैंने तोड़ दिया है, क्योंकि मेरी यह इच्छा नहीं है और न थी ही कि वे कार्य जारी रहें। तुम्हारे करने के लिए मैंने दूसरा काम चुना है और उसी के लिए मैं तुम्हें यहां लाया हूं ताकि मैं तुम्हें यह बात सिखा दूं जिसे तुम स्वयं नहीं सीख सके और तुम्हें अपने काम के लिए तैयार कर लूं।" इस के बाद भगवान् ने मेरे हाथों में गीता रख दी। मेरे अंदर उनकी शक्ति प्रवेश कर गयी और मैं गीता की साधना करने में समर्थ हुआ। मुझे केवल बुद्धि द्वारा ही नहीं, बल्कि अनुभूति द्वारा भी जानना था कि श्रीकृष्ण की अर्जुन से क्या मांग थी और वे उन लोगों से क्या मांगते हैं जो उनका कार्य करने की इच्छा रखते हैं, अर्थात् घृणा और कामना-वासना से मुक्त होना होगा, फल की इच्छा न रखकर भगवान् के लिए कर्म करना होगा, अपनी इच्छा का त्याग करना होगा और निश्चेष्ट तथा सच्चा यंत्र बनकर भगवान् के हाथों में रहना होगा, ऊंच और नीच, मित्र और शत्रु, सफलता और विफलता के प्रति समदृष्टि रखनी होगी और यह सब होते हुए भी उनके कार्य में कोई अवहेलना न आने पाए। मैंने यह जाना कि हिंदू धर्म का मतलब क्या है। बहुधा हम हिंदू धर्म, सनातन धर्म की बातें करते हैं, किंतु वास्तव में हममें से कम ही लोग यह जानते हैं कि यह धर्म क्या है। दूसरे धर्म मुख्य रूप से विश्वास, व्रत, दीक्षा और मान्यता को महत्त्व देते हैं, किंतु सनातन धर्म तो स्वयं जीवन है, यह इतनी विश्वास करने की चीज नहीं है जितनी जीवन में उतारने की चीज है। यही वह धर्म है जिसे मानवजाति के कल्याण के लिए प्राचीन काल से इस प्रायद्वीप के एकांतवास में संजोया जाता रहा है। यही धर्म देने के लिए भारत उठ रहा है। भारतवर्ष, दूसरे देशों की तरह, अपने लिए ही या मजबूत हो कर दूसरों को कुचलने के लिए नहीं उठ रहा है। वह उठ रहा है सारे संसार पर वह सनातन ज्योति बिखेरने के लिए जो उसे सौंपी गयी है। भारत का जीवन सदा ही मानव जाति के लिए रहा है, उसे अपने लिये नहीं बल्कि मानव जाति के लिए महान् होना है।

अत: भगवान् ने मुझे यह दूसरी वस्तु दिखायी — उन्होंने मुझे हिंदू धर्म के मूल सत्य का साक्षात्कार करा दिया। उन्होंने जेलरों के दिल को मेरी ओर मोड़ दिया। उन्होंने जेल के प्रधान अंग्रेज अधिकारी से कहा कि "ये कालकोठरी में बहुत कष्ट पा रहे हैं; इन्हें कम से कम सुबह-शाम आध-आध घंटा कोठरी के बाहर टहलने की अनुमति दी जाये।" यह अनुमति मिल गई और जब मैं टहल रहा था तो भगवान् की शक्ति ने फिर मेरे अंदर प्रवेश किया। मैंने उस जेल की ओर दृष्टि डाली जो मुझे और लोगों को अलग किए हुए थी। मैंने देखा कि अब मैं उसकी ऊंची दीवारों का बंदी नहीं हूं; मुझे घेरे हुए थे वासुदेव। मैं अपनी कालकोठरी के सामने पेड़ की शाखाओं के नीचे टहल रहा था, परंतु वहां पेड़ न था, मुझे प्रतीत हुआ कि वे वासुदेव हैं; मैंने देखा कि स्वयं श्रीकृष्ण खड़े हैं और मेरे ऊपर अपनी छाया किए हुए हैं। मैंने अपनी कालकोठरी के सींखचों की ओर देखा, उस जाली की ओर देखा जो दरवाजे का काम कर रही थी, वहां भी वासुदेव दिखायी दिए। स्वयं नारायण संतरी बन कर पहरा दे रहे थे। जब मैं उन मोटे कंबलों पर लेटा जो मुझे पलंग की

जगह मिले थे तो मैंने अनुभव किया कि मेरे सखा और प्रेमी श्रीकृष्ण मुझे अपनी बाहुओं में लिये हुए हैं। मुझे उन्होंने जो गहरी दृष्टि दी थी उसका यह पहला प्रयोग था। मैंने जेल के कैदियों — चोरों, हत्यारों और बदमाशों — को देखा और मुझे वासुदेव दिखाई पड़े, उन अंधेरे में पड़ी आत्माओं और बुरी तरह काम में लिए गए शरीरों में मुझे नारायण मिले। उन चोरों और डाकुओं में बहुत-से ऐसे थे जिन्होंने अपनी सहानुभूति और दया के द्वारा मुझे लज्जित कर दिया, इन विपरीत परिस्थितियों में मानवता विजयी हुई थी। इनमें से एक आदमी को मैंने विशेष रूप से देखा जो मुझे एक संत मालूम हुआ। वह हमारे देश का एक किसान था जो लिखना-पढ़ना नहीं जानता था, जिसे तथाकथित डकैती के अभियोग में दस वर्ष का कठोर दंड मिला था। यह उनमें से एक व्यक्ति था जिन्हें हम वर्ग के मिथ्याभिमान में आकर "छोटो लोक" (नीच) कहा करते हैं। फिर एक बार भगवान् मुझसे बोले, उन्होंने कहा, "अपना कुछ थोड़ा-सा काम करने के लिए मैंने तुम्हें जिनके बीच भेजा है उन लोगों को देखो। जिस जाति को मैं ऊपर उठा रहा हूं उसका स्वरूप यही है और इसी कारण मैं उसे ऊपर उठा रहा हूं।"

जब छोटी अदालत में मुकद्दमा शुरू हुआ और हम लोग मैजिस्ट्रेट के सामने खड़े किए गए तो वहां भी मेरी अंतर्दृष्टि मेरे साथ थी। भगवान् ने मुझसे कहा, "जब तुम जेल में डाले गये थे तो क्या तुम्हारा हृदय हताश नहीं हुआ था, क्या तुमने मुझे पुकार कर यह नहीं कहा था — कहां, तुम्हारी रक्षा कहां है ? लो, अब मेजिस्ट्रेट की ओर देखो, सरकारी वकील की ओर देखो।" मैंने देखा अदालत की कुर्सी पर मेजिस्ट्रेट नहीं, स्वयं वासुदेव, नारायण बैठे थे। अब मैंने सरकारी वकील की ओर देखा, पर वहां कोई सरकारी वकील नहीं दिखाई दिया, वहां तो श्रीकृष्ण बैठे मुस्कुरा रहे थे, मेरे सखा, मेरे प्रेमी। उन्होंने कहा, "अब डरते हो? मैं सभी मनुष्यों में विद्यमान हूं और उनके सभी कर्मों और शब्दों पर राज करता हूं। मेरा संरक्षण अब भी तुम्हारे साथ है और तुम्हें डरना नहीं चाहिए। तुम्हारे विरूद्ध जो यह मुकद्दमा चलाया गया है उसे मेरे हाथों में सौंप दो। यह तुम्हारे लिए नहीं है। मैं तुम्हें यहां मुकद्दमें के लिए नही बल्कि किसी और काम के लिए लाया हूं। यह तो मेरे काम का एक साधनमात्र है, इससे अधिक कुछ नहीं।" इसके बाद जब सेशन जज की अदालत में विचार आरंभ हुआ तो मैं अपने वकील के लिए ऐसी बहुत-सी हिदायतें लिखने लगा कि गवाही में मेरे विरूद्ध कही गयी बातों में कौन-सी बातें गलत हैं और किन-किन पर गवाहों से जिरह की जा सकती है। तब एक ऐसी घटना घटी जिसकी मैं आशा नहीं करता था। मेरे मुकद्दमे की पैरवी के लिए जो प्रबंध किया गया था वह एकाएक बदल गया और मेरी सफाई के लिए एक दूसरे ही वकील खड़े हुए। वे अप्रत्याशित रूप से आ गए, वे मेरे एक मित्र थे, किंतु मैं नहीं जानता था कि वे आयेंगे। आप सभी ने उनका नाम सुना है, जिन्होंने मन से सभी विचार निकाल बाहर किये और इस मुकद्दमे के सिवा सारी वकालत बंद कर दी, जिन्होंने महीनों लगातार आधी-आधी रात तक जागकर मुझे बचाने के लिए अपना स्वास्थ्य बिगाड़ लिया— वे हैं चितरंजन दास। जब मैंने उन्हें देखा तो मुझे संतोष हुआ, फिर भी मैं समझता था कि

हिदायतें लिखनी जरूरी हैं। इसके बाद यह विचार भी हटा दिया गया और मेरे अंदर से आवाज आयी, "यही वह आदमी है जो तुम्हारे पैरों के चारों ओर फैले हुए जाल से तुम्हें बाहर निकालेगा। तुम इन कागजों को अलग धर दो। इन्हें तुम हिदायतें नहीं दोगे, मैं दूंगा।" उस समय से इस मुकद्दमें के संबंध में मैंने अपनी ओर से वकील से एक शब्द नहीं कहा, कोई हिदायत नहीं दी और यदि कभी मुझसे कोई सवाल पूछा गया तो मैंने सदा यही देखा कि मेरे उत्तर से मुकद्दमे को कोई मदद नहीं मिली। मैंने मुकद्दमा उन्हें सौंप दिया और उन्होंने पूरी तरह उसे अपने हाथों में ले लिया, और उसका परिणाम आप जानते ही हैं। मैं सदा यह जानता था कि मेरे संबंध में भगवान् की क्या इच्छा है, क्योंकि मुझे बार-बार यह वाणी सुनायी पड़ती थी, मेरे अंदर से सदा यह आवाज आया करती थी, "मैं रास्ता दिखा रहा हूं, इसलिए डरो मत। मैं तुम्हें जिस काम के लिए जेल में लाया हूं अपने उस काम की ओर मुड़ो और जब तुम जेल से बाहर निकलो तो यह याद रखना— कभी डरना मत, कभी हिचकिचाना मत। याद रखो, यह सब मैं कर रहा हूं, तुम या कोई और नहीं। अत: चाहे जितने बादल घिरें, चाहे जितने खतरे और दुख-कष्ट आयें, कठिनाइयां हों, चाहे जितनी असंभवताएं आयें, कुछ भी असंभव नहीं है, कुछ भी कठिन नहीं है। मैं इस देश और उसके उत्थान में हूं, मैं वासुदेव हूं, मैं नारायण हूं। जो कुछ मेरी इच्छा होगी वही होगा, दूसरों की इच्छा से नहीं। मैं जिस चीज को लाना चाहता हूं उसे कोई मानवशक्ति रोक नहीं सकती।"

इस बीच वे मुझे उस एकांत कालकोठरी से बाहर ले आये और मुझे उन लोगों के साथ रख दिया जिन पर मेरे साथ ही अभियोग चल रहा था। आज आपने मेरे आत्म—त्याग और देश-प्रेम के बारे में बहुत कुछ कहा है। मैं जब जेल से निकला हूं तब से इसी प्रकार की बातें सुनता आ रहा हूं, किंतु ऐसी बातें सुनने से मुझे लज्जा आती है, मेरे अंदर एक तरह की वेदना होती है। क्योंकि मैं अपनी दुर्बलता जानता हूं, मैं अपने दोषों और त्रुटियों का शिकार हूं। मैं इन बातों के बारे में पहले भी अंधा न था और जब मेरे एकांतवास में, ये सब-की-सब मेरे विरूद्ध खड़ी हो गयीं तो मैंने इनका पूरी तरह से अनुभव किया। तब मुझे मालूम हुआ कि मनुष्य के नाते मैं दुर्बलताओं का एक ढेर हूं, दोषभरा एक अपूर्ण यंत्र हूं, मुझमें ताकत तभी आती है जब कोई उच्चतर शक्ति मेरे अंदर आ जाये। अब मैं उन युवकों के बीच में आया और मैंने देखा कि उनमें से बहुतों में एक प्रचण्ड साहस और शक्ति है अपने को मिटा देने की और उनकी तुलना में मैं कुछ भी नहीं हूं। इनमें से एक-दो ऐसे थे जो केवल बल और चरित्र में ही मुझसे बढ़कर नहीं थे— ऐसे तो बहुत थे— बल्कि मैं जिस बुद्धि की योग्यता का अभिमान रखता था, उसमें भी बढ़े हुए थे। भगवान् ने मुझसे फिर कहा, "यही वह युवक—दल, वह नवीन और बलवान् जाति है जो मेरे आदेश से ऊपर उठ रही है। ये तुमसे अधिक बड़े हैं। तुम्हें भय किस बात का है ? यदि तुम इस काम से हट जाओ या सो जाओ तो भी काम पूरा होगा। कल तुम इस काम से हटा दिये जाओ तो ये युवक तुम्हारे काम को उठा लेंगे और उसे इतने प्रभावशाली ढंग से करेंगे जैसे तुमने भी

नहीं किया। तुम्हें इस देश को एक वाणी सुनाने के लिए मुझसे कुछ बल मिला है, यह वाणी इस जाति को ऊपर उठाने में सहायता देगी।" यह वह दूसरी बात थी जो भगवान् ने मुझसे कही।

इसके बाद अचानक कुछ हुआ और क्षणभर में मुझे कालकोठरी के एकांतवास में पहुंचा दिया गया। इस एकांतवास में मेरे अंदर क्या हुआ यह कहने की प्रेरणा नहीं हो रही, बस इतना काफी है कि वहां दिन-प्रतिदिन भगवान् ने अपने चमत्कार दिखाये और मुझे हिंदू धर्म के वास्तविक सत्य का साक्षात्कार कराया। पहले मेरे अंदर अनेक प्रकार के संदेह थे। मेरा लालन-पालन इंग्लैंड में विदेशी भावों और सर्वथा विदेशी वातावरण में हुआ था। एक समय मैं हिंदू धर्म की बहुत-सी बातों को मात्र कल्पना समझता था, यह समझता था कि इसमें बहुत कुछ केवल स्वप्न, भ्रम या माया है। परंतु अब दिन-प्रतिदिन मैंने हिंदू धर्म के सत्य को, अपने मन में, अपने प्राण में और अपने शरीर में अनुभव किया। वे मेरे लिए जीवित अनुभव हो गये और मेरे सामने ऐसी सब बातें प्रकट होने लगीं जिनके बारे में भौतिक विज्ञान कोई व्याख्या नहीं दे सकता। जब मैं पहले-पहल भगवान् के पास गया तो पूरी तरह भक्तिभाव के साथ नहीं गया था, पूरी तरह ज्ञानी के भाव से भी नहीं गया था। बहुत दिन हुए, स्वदेशी-आंदोलन शुरू होने से पहले और मेरे सार्वजनिक काम में घुसने से कुछ वर्ष पहले बड़ौदा में मैं उनकी ओर बढ़ा था।

उन दिनों जब मैं भगवान् की ओर बढ़ा तो मुझे उन पर जीवंत श्रद्धा न थी। उस समय मेरे अंदर अज्ञेयवादी था, नास्तिक था, संदेहवादी था और मुझे पूरी तरह विश्वास न था कि भगवान् हैं भी। मैं उनकी उपस्थिति का अनुभव नहीं करता था। फिर भी कोई चीज थी जिसने मुझे वेद के सत्य की ओर, गीता के सत्य की ओर, हिंदू धर्म के सत्य की ओर आकर्षित किया। मुझे लगा कि इस योग में कहीं पर कोई महाशक्तिशाली सत्य अवश्य है, वेदांत पर आधारित इस धर्म में कोई परम सत्य अवश्य है। इसलिए जब मैं योग की ओर मुड़ा और योगाभ्यास करके यह जानने की संकल्प किया कि मेरा सोचना सही है या नहीं तो मैंने इसे इस भाव और इस प्रार्थना से शुरू किया, "हे भगवान्, यदि तुम हो तो तुम मेरे हृदय की बात जानते हो। तुम जानते हो कि मैं मुक्ति नहीं मांगता, मैं ऐसी कोई चीज नहीं मांगता जो दूसरे मांगा करते हैं। मैं केवल इस जाति को ऊपर उठाने की शक्ति मांगता हूं, मैं केवल यह मांगता हूं कि मुझे इस देश के लोगों के लिये, जिनसे मैं प्यार करता हूं, जीने और कर्म करने की अनुमति मिले और यह प्रार्थना करता हूं कि मैं अपना जीवन उनके लिए लगा सकूं।" मैंने योगसिद्धि पाने के लिए बहुत दिनों तक प्रयास किया और अंत में किसी हद तक मुझे मिली भी, पर जिस बात के लिए मेरी बहुत अधिक इच्छा थी उसके संबंध में मुझे संतोष नहीं हुआ। तब उस जेल के, कालकोठरी के एकांतवास में मैंने उसके लिए फिर से प्रार्थना की। मैंने कहा, "मुझे अपना आदेश दो, मैं नहीं जानता कि कौन-सा काम करूं और कैसे करूं। मुझे एक संदेश दो।" इस योगयुक्त अवस्था में मुझे दो संदेश मिले। पहला यह था, "मैंने तुम्हें एक काम सौंपा है और वह है इस जाति के उत्थान में सहायता देना। शीघ्र ही वह समय आयेगा जब तुम्हें जेल के बाहर जाना होगा; क्योंकि मैं नहीं चाहता कि इस बार

तुम्हें सजा हो या तुम अपना समय, औरों की तरह अपने देश के लिए कष्ट सहते हुए बिताओ। मैंने तुम्हें काम के लिये बुलाया है और यही आदेश है जो तुमने मांगा था। मैं तुम्हें आदेश देता हूं कि जाओ और मेरा काम करो।" दूसरा संदेश आया, वह इस प्रकार था, "इस एक वर्ष के एकांतवास में तुम्हें कुछ दिखाया गया है, वह चीज दिखायी गयी है जिसके बारे में तुम्हें संदेह था, वह है हिंदू धर्म का सत्य। इसी धर्म को मैं संसार के सामने उठा रहा हूं, यही वह धर्म है जिसे मैंने ऋषि–मुनियों और अवतारों के द्वारा विकसित किया और पूर्ण बनाया है और अब यह धर्म अन्य राष्ट्रों में मेरा काम करने के लिए बढ़ रहा है। मैं अपनी वाणी का प्रसार करने के लिए इस राष्ट्र को उठा रहा हूं। यही वह सनातन धर्म है जिसे तुम पहले सचमुच नहीं जानते थे, किंतु जिसे अब मैंने तुम्हारे सामने प्रकट कर दिया है। तुम्हारे अंदर जो नास्तिकता थी, जो संदेह था उनका उत्तर दे दिया गया है, क्योंकि मैंने अंदर और बाहर स्थूल और सूक्ष्म, सभी प्रमाण दे दिये हैं और उनसे तुम्हें संतोष हो गया है। जब तुम बाहर निकलो तो सदा अपने राष्ट्र को यही वाणी सुनाना कि वे सनातन धर्म के लिए उठ रहे हैं, वे अपने लिए नहीं बल्कि संसार के लिए उठ रहे हैं। मैं उन्हें संसार की सेवा के लिए स्वतंत्रता दे रहा हूं। अतएव जब यह कहा जाता है कि भारतवर्ष ऊपर उठेगा तो उसका अर्थ होता है सनातन धर्म ऊपर उठेगा। जब कहा जाता है कि भारतवर्ष महान् होगा तो उसका उसका अर्थ होता है सनातन धर्म महान् होगा। जब कहा जाता है कि भारतवर्ष बढ़ेगा और फैलेगा तो इसका अर्थ होता है सनातन धर्म बढ़ेगा और संसार पर छा छायेगा। धर्म के लिए और धर्म के द्वारा ही भारत का अस्तित्व है। धर्म की महिमा बढ़ाने का अर्थ है देश की महिमा बढ़ाना। मैंने तुम्हें दिखा दिया है कि मैं सब जगह हूं और केवल उन्हीं के अंदर कार्य नहीं कर रहा जो देश के लिए मेहनत कर रहे हैं बल्कि उनके अंदर भी जो उनका विरोध करते और मार्ग में रोड़े अटकाते हैं। मैं प्रत्येक व्यक्ति के अंदर काम कर रहा हूं और मनुष्य चाहे जो कुछ सोचें या करें, पर वे मेरे हेतु की सहायता करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकते। वे भी मेरा ही काम कर रहे हैं; वे मेरे शत्रु नहीं बल्कि मेरे यंत्र हैं। तुम यह जाने बिना भी कि तुम किस ओर जा रहे हो, अपनी सारी क्रियाओं के द्वारा आगे बढ़ रहे हो। तुम करना चाहते हो कुछ और पर कर बैठते हो कुछ और। तुम एक परिणाम को लक्ष्य बनाते हो और तुम्हारे प्रयास ऐसे हो जाते हैं जो उससे भिन्न या उल्टे परिणाम लाते हैं। शक्ति का आविर्भाव हुआ है और उसने लोगों में प्रवेश किया है। मैं एक जमाने से इस उत्थान की तैयारी करता आ रहा हूं और अब वह समय आ गया है। अब मैं ही इसे पूर्णता की ओर ले जाऊंगा।"

यही वह वाणी है जो मुझे आपको सुनानी है। आपकी सभा का नाम है "धर्मरक्षिणी सभा"। अस्तु, धर्म का संरक्षण, दुनिया के सामने हिंदूधर्म का संरक्षण और उत्थान – यही कार्य हमारे सामने है। परंतु हिंदूधर्म क्या है ? वह धर्म क्या है जिसे हम सनातन धर्म कहते हैं ? वह हिंदूधर्म इसी नाते है कि हिंदूजाति ने इसको रखा है, क्योंकि समुद्र और हिमालय से घिरे हुए इस प्रायद्वीप के एकांतवास में यह फला–फूला है, क्योंकि इस पवित्र और प्राचीन भूमि पर इसकी युगों तक रक्षा करने का भार आर्यजाति को सौंपा

गया था। परंतु यह धर्म किसी एक देश की सीमा से घिरा नहीं है, यह संसार के किसी सीमित भाग के साथ विशेष रूप से और सदा के लिए बंधा नहीं है। जिसे हम हिंदूधर्म कहते हैं वह वास्तव में सनातन धर्म है, क्योंकि यही विश्वव्यापी धर्म है जो दूसरे सभी धर्मों का आलिंगन करता है। यदि कोई धर्म विश्वव्यापी न हो तो वह सनातन भी नहीं हो सकता। कोई संकुचित धर्म, सांप्रदायिक धर्म, अनुदार धर्म कुछ काल और किसी मर्यादित हेतु के लिए ही रह सकता है। यही एक ऐसा धर्म है जो अपने अंदर विज्ञान के आविष्कारों और दर्शनशास्त्र के चिंतनों का पूर्वाभास देकर और उन्हें अपने अंदर मिलाकर जड़वाद पर विजय प्राप्त कर सकता है। यही एक धर्म है जो मानवजाति के दिल में यह बात बिठा देता है कि भगवान् हमारे निकट हैं, यह उन सभी साधनों को अपने अंदर ले लेता है जिनके द्वारा मनुष्य भगवान् के पास पहुंच सकते हैं। यही एक ऐसा धर्म है जो प्रत्येक क्षण, सभी धर्मों के माने हुए इस सत्य पर जोर देता है कि भगवान् हर आदमी और हर चीज में हैं तथा हम उन्हीं में चलते-फिरते हैं और उन्हीं में हम निवास करते हैं। यही एक ऐसा धर्म है जो इस सत्य को केवल समझने और उस पर विश्वास करने में ही हमारा सहायक नहीं होता बल्कि अपनी सत्ता के अंग-अंग में इसका अनुभव कराने में भी हमारी मदद करता है। यही एक धर्म है जो संसार को दिखा देता है कि संसार है वासुदेव की लीला। यही एक ऐसा धर्म है जो हमें बताता है कि इस लीला में हम अपनी भूमिका अच्छी-से-अच्छी तरह कैसे निभा सकते हैं, जो हमें यह दिखाता है कि इसके सूक्ष्म-से-सूक्ष्म नियम क्या हैं, इसके महान्-से-महान् विधान कौन—से हैं। यही एक ऐसा धर्म है जो जीवन की छोटी-से-छोटी बात को भी धर्म से अलग नहीं करता, जो यह जानता है कि अमरता क्या है और जिसने मृत्यु की वास्तविकता को हमारे अंदर से एकदम निकाल दिया है।

यही वह वाणी है जो आपको सुनाने के लिए आज मेरी ज़बान पर रख दी गई थी। मैं जो कुछ कहना चाहता था वह तो मुझसे अलग कर दिया गया और जो कहने के लिए दिया गया है उससे अधिक मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं है। जो वाणी मेरे अंदर रख दी गई थी केवल वही आपको सुना सकता हूं। अब वह समाप्त हो चुकी है। पहले भी एक बार जब मेरे अंदर यही शक्ति काम कर रही थी तो मैंने आपसे कहा था कि यह आंदोलन राजनीतिक आंदोलन नहीं है और राष्ट्रीयता राजनीति नहीं, बल्कि धर्म है, एक विश्वास है, एक निष्ठा है। उसी बात को आज फिर से दोहराता हूं, किंतु आज मैं उसे दूसरे ही रूप में उपस्थित कर रहा हूं। आज मैं यह नहीं कहता कि राष्ट्रीयता एक विश्वास है, एक धर्म है, एक निष्ठा है, बल्कि मैं यह कहता हूं कि सनातन धर्म ही हमारे लिए राष्ट्रीयता है। यह हिंदूजाति सनातन धर्म को लेकर ही पैदा हुई है, उसी को लेकर चलती है और उसी को लेकर पनपती है। जब सनातन धर्म की अवनति होती है तब इस जाति की भी अवनति होती है और यदि सनातन धर्म का विनाश संभव होता तो सनातन धर्म के साथ-ही-साथ इस जाति का भी विनाश हो जाता। सनातन धर्म ही है राष्ट्रीयता। यही वह संदेश है जो मुझे आपको सुनाना है।

काल तत्त्व

इतिहास तत्त्वदर्शन और मन्वन्तर विज्ञान

• वासुदेव पोद्दार

मानवीय चेतना का इतिहास युगचक्र का अनुवर्तक है, जिस प्रकार कालचक्र घूमता है, चेतना में नये क्रान्तिकारी परिवर्तन होते रहते हैं। कलियुग के प्रथम चरण के समाप्त होते—होते इस ग्रह पर नवीन चेतना का पुन: विस्फोट होता है। फलत: दर्शन, विज्ञान, कला, साहित्य यहाँ तक कि मानवीय चिन्तन के सभी क्षेत्र अपने असीमित विषय विस्तार, विपुल विषय विभाग, एवं अपरिमित शाखा विस्तार के साथ बृहत्तम होते जा रहे हैं। ज्ञान का यह महान ऊर्जा—विस्फोट सामान्य नहीं, विगत २०० वर्षों के इतिहास में मनुष्य ने असीमित सफलताएँ प्राप्त की हैं। कभी-कभी ऐसा लगता है, विश्व के अनन्त ज्ञान का महाकोश पृथ्वी पर मानवीय माध्यम का आश्रय लेकर प्रकट हो गया, जिसने आज अपनी नवीन चेतना के नवीन-विस्फोट के द्वारा पृथ्वी के सम्पूर्ण क्षेत्रफल को नवीन बना दिया। मानव अपनी भुजाओं से अनन्त का स्पर्श करने के लिए आकुल है, चन्द्रमा पर उसने अपने चरण रख दिये हैं, अब वह नभोगंगा के परमव्योम पर अपने चरण रखने जा रहा है।

आज मानव के पास कोटि-कोटि सहस्र नभोमन्दाकिनियों के उद्‌भव और विलय के तात्त्विक इतिहास की अनेक महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ विद्यमान हैं। उसने विश्व की संरचना के प्रथम अंकुरोद्‌भव पर वैज्ञानिक ढंग से सोचा है। प्रथम क्षण के परात्पर विभाग में क्या कुछ घटित हुआ था, वह आज उससे अलक्षित नहीं। उसने आदि अण्ड के तापमान की जानकारियाँ संख्यात्मक निर्देश के साथ प्रस्तुत की हैं। इस प्रचण्ड तापमान से ही अण्ड का विस्फोट होता है। यह विस्फोटित द्रव्यराशि ही तारिकाओं के रूप में समूहित होती हुई, नभोमन्दाकिनियों का निर्माण करती है। अन्त में अपने विकासक्रम में परिणामधर्मा होती हुई ज्ञात होती हुई ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय के रूप में विभक्त हो जाती है। यही अपने विकास के चरमबिन्दु पर पहुँच कर प्रमाण-प्रमेय और प्रमाता के स्वरूप को स्थिर करती हुई मानवीय अणु के रूप में प्रकट होती है। विराट् विश्व प्रज्ञानघन सत्ता की वह छन्दोमयी तरंग है, जो प्रत्येक सृष्टिकल्प में काल-चक्र के प्रतिघात के अनुसार विश्व रूप में प्रतिबिम्बित होती है, वैसा ही स्वरसंगीत उत्पन्न होता है, वैसे ही स्वरसंगीत इस ग्रह की युगचेतना मुखरित हो उठती है। पृथ्वी की अपनी नृत्य गति में फिर वही संगीत गूंजता है, वही स्वर बजता है। भारतीय सृष्टि-तत्त्वशास्त्र के अनुसार पृथ्वी का इतिहास सूर्य के भीतर गूंजते हुए स्वर-संगीत का परिणाम है, जैसे ही सूर्य के भीतर का संगीत

बदलता है — वैसे ही पृथ्वी की जैव-चेतना के इतिहास का प्रवर्तन होता है। यही मन्वन्तर प्रवर्तन का विज्ञान है। इस ग्रह का समग्र जैव और अजैव परिवर्तन सूर्य के स्वर संगीत से संचालित और नियन्त्रित होता है। हमारा गायत्री छन्द इस स्वर संगीत के अनुशासन के ही महास्पन्द का छन्दोमय प्रकम्प है।

विज्ञान के अनुसार पृथ्वी की सुविशाल वेगवती परिक्रमा के फलस्वरूप कभी वीणा और कभी वंशी का स्वर निरन्तर गूंजता रहता है। भारतीय परम्परा में देवर्षि नारद की वीणा और भगवान श्रीकृष्ण की वंशी इसी विज्ञान के प्रतीकभूत निदान हैं। पृथ्वी के इस संगीत को हम आज इलैक्ट्रोनिक यंत्रों की सहायता से सुन सकते हैं। यह संगीत जिस युग में जिस स्वर से संयुक्त होता है जिस अन्तरा को धारण करता है, विकास की संरचनात्मक संज्ञानधारा उसी अन्तरा की तरंग-गति को प्राप्त होती है। यही मन्वतर के ७१ महायुगों के कालचक्र का अवबोधक स्वरूप है। स्वायंभुव मन्वन्तर का सूर्यसम्भूत संगीत 'अ' स्वर प्रधान था — पृथ्वी के वंशीनाद में यही स्वर निपीड़ित हो उठा, उसकी महती वीणा पर यही स्वर झंकृत हो रहा था। सूर्य का वर्तमान स्वर — 'ऋ' है, जो विगत १२ करोड़ वर्षों से निरन्तर सूर्य मण्डल से उत्थित हो रहा है, पृथ्वी भी इसी स्वर का मुरली वादन कर रही है। सूर्य का यह संगीत पृथ्वी तक सीधा नहीं पहुंचता, चन्द्रमण्डल से प्रतिघातित होकर हम तक आता है। फलत: पृथ्वी की मुरली के प्राणमय छिद्रों में नई अन्तरा उत्पन्न हो जाती है। पृथ्वी के पार्थिव इतिहास का प्रवर्तन और परिवर्तन इस संगीत की लय के अनुसार होता है — वैसा ही प्राणों का स्पन्दन, वैसा ही युगबोध, वैसा ही मन्वन्तर की चेतना का विकास। विज्ञान ने इस सूक्ष्म संगीत की भाषा को पढ़ने का कुछ स्वल्प प्रयास किया है। इसके अनुसार चन्द्रमा के मण्डल से उठता हुआ संगीत गूंजती हुई घण्टाध्वनि की तरह है, पृथ्वी का स्वर मुरलीवादन और वीणा की झंकार की तरह।

सूर्य स्वयं संगीत मुखर है, उसके मण्डल में अंगिरा और भृगु अग्नि का विस्फोट होता रहता है। भारतीय तत्त्ववेत्ताओं के अनुसार १ अरब, ९७ करोड़ वर्षों के इस सुदीर्घ काल में सूर्य रूप विश्व-वेणु का यह सातवाँ स्वर परिवर्तन है। पृथ्वी के जैव इतिहास के परिवर्तन को सूर्य-संचालित स्वरों के अनुसार ही मन्वन्तरों के कालचक्र में बांटा गया है, एक कालचक्र का आवर्तन ३० करोड़, ६७ लाख, २० हजार वर्षों में होता है, इस दीर्घ कालखण्ड में एक ही स्वर सूर्य में निरन्तर चलता रहता है। काल के दीर्घ प्रवाह में इस स्वर विशेष की ७१ अन्तराएँ ४:३:२:१ के प्रकम्प पर बदलती हैं, यही इसके ७१ महायुगात्मक कालचक्रों का स्वरूप है। ४:३:२:१ की अन्तरा का प्रकम्प ही सत्ययुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग का कालमात्रक है। गणना की इकाई एक से प्रारम्भ होती है, 'कल' धातु कलन वा गणना के अर्थ में प्रसिद्ध है, इस इकाई से यहाँ काल की कलना व गणना का प्रारम्भ होता है, इसलिए युग का व्युत्पत्तिपरक नाम कलि—काल वा कलियुग है। लेटिन भाषा में कैलकुलेशन, कैलकुलेटर आदि शब्द इस 'कल' धातु से ही निष्पन्न होते हैं। कलिका कालमान ४,३२,००० वर्ष है। इससे दुगुना द्वापर, त्रिगुणित त्रेता एवं

चतुर्गुणित काल कृतयुग है। संस्कृत भाषा में 'कृत' शब्द का अर्थ 'चार' प्रसिद्ध है। सूर्य आकाश गंगा के केन्द्र की परिक्रमा ३० करोड़, ६७ लाख, २० हजार वर्षों में पूरी करता है। परिक्रमा का पथ सीधा नहीं, वहाँ मण्डलाकार वक्रता है, अत: सूर्य की परिक्रमा सीधी नहीं, वह लुढ़कता हुआ अपनी परिक्रमा सम्पन्न करता है, इस लुढ़कन का कालपथ ४:३:२:१ के काल—सूत्र के छन्द पर बंधा है, यही चार युगों का योग महायुग है — ४३ लाख, २० हजार वर्ष। सूर्य का सम्पूर्ण परिक्रमापथ अपनी मण्डलाकार परिधि पर ७१ घुमावों पर विभक्त है, यही एक मन्वन्तर के ७१ महायुग हैं। विज्ञान के अनुसार सूर्य आकाश गंगा के केन्द्र की परिक्रमा जितने वर्षों में पूरी करता है, वहाँ तीन—चार प्रकार की वर्ष संख्यायें पाठ्यग्रन्थों में प्राप्त होती हैं — २० करोड़ वर्ष, २२ करोड़ वर्ष एवं कहीं-कहीं २५ करोड़ वर्षों का उल्लेख है, इस भेद का कारण है सम्भवत: दृश्य गणित। सूर्य की परिक्रमा-गति सर्वदा एक जैसी नहीं — वह परमव्योम के इस अति दीर्घ पथ पर कई बार मन्द और तीव्र होती रहती है। भारतीय तत्त्वशास्त्र में दिया गया ३० करोड़, ६७ लाख, २० हजार वर्षों का मन्वन्तरीय काल सूर्य की औसत गति पर आधारित है, न कि दृश्य गति पर, क्योंकि दृश्य गति सर्वदा बदलती रही है।

सूर्य में इस स्वर भेद का कारण, उसके आयतन के सिकुड़ने से होने वाले द्रव्य भेद का विभिन्न दबाव है। संकोच के निरन्तर बढ़ने के क्रम में वैवस्तव मन्वन्तर तक पहुँचते—पहुँचते सूर्य की तापमान जन्य कृष्णता पहले की तुलना में और भी बढ़ जाती है, उससे 'ऋ' स्वर बहिर्भूत होता है। तन्त्र में 'ऋ' अग्नि का स्वर स्वीकार किया गया है। वर्तमान वैवस्वत मन्वन्तर के सन्दर्भ में 'ऋ' स्वर की सूचना इस प्रकार है —

सप्तमात्तु मुखात्तस्य ततो (सूतो) वैवस्वतो मनु:।
ऋकारश्च स्वरस्तत्र वर्णत: कृष्ण उच्यते।।

पृथ्वी के समग्र इतिहास की कुंजी मन्वन्तर विज्ञान में विद्यमान है। इसकी सहायता से अतीत ही नहीं पृथ्वी का वर्तमान और भविष्य भलीभाँति समझा जा सकता है। इस ग्रह के समग्र इतिहास की कुंजी इन छ: भागों में विभक्त है — (१) मनु, (२) सप्तर्षि, (३) देव, (४) इन्द्र, (५) मनुपुत्र और (६) अवतार —

मन्वन्तरं मनुर्देवा मनुपुत्रा: सुरेश्वर:।
ऋषयोंऽशावतारश्च हरे: षड्विधमुच्यते।।

ये छ: तत्त्व पृथ्वी के कालचक्र की गति के समग्र इतिहास को उजागर कर देते हैं।

पृथ्वी का ४ अरब ३२ करोड़ वर्षों का जैव इतिहास १४ मन्वन्तरों मे विभक्त है। सूर्य इतने वर्षों में आकाश गंगा के केन्द्र की १४ परिक्रमा सम्पन्न करता है, प्रत्येक परिक्रमा का काल ३० करोड़ वर्षों से अधिक है, इस दीर्घ काल यात्रा के फलस्वरूप उसके मण्डल का सम्पूर्ण ईंधन बदल जाता है, उसका सम्पूर्ण रूप से नवीकरण होता है, यही उसका इन्द्र परिवर्तन है। भीतर के ईंधन के बदलने से उसकी सातों किरणें बदल जाती हैं, किरण का प्रसिद्ध नाम पर्याय पद ऋषि है, यही सप्तऋषि परिवर्तन है। ऋषि वा किरणों के सम्मिश्रण से जो नवीन तत्व उत्पन्न होता है — वह प्राण रूप देवसंस्था है,

उसका भी नवीकरण हो जाता है। देव संस्था का प्रमुख प्रतिनिधि तत्त्व यहाँ इन्द्र पद से वाच्य है, वह भी बदल जाता है। 'मनु' का अर्थ है – नये विकास में प्रकट या व्यक्त होने वाली मन की नवीन चैतन्यसत्ता, जिसके अनुसार नया विकास रूप ग्रहण करता है। मनुपुत्र यहाँ बीज हैं, जिनसे भावी सृष्टि का विकास होता है, वे भी मनु के बदलने से बदल जाते हैं – नवीन बीजों की सृष्टि होती है। यही मनुपुत्रों के बदलने का अर्थ है – पुराने बीज के स्थान पर नये बीज का आगमन। सूर्य का एक पर्याय विष्णु व हरि है, सतत वर्धमान विकास में जब अवरोध उत्पन्न होता है, तब उस अवरोध की समाप्ति भी सूर्य के तेजोवतरण से होती है, यही यहाँ अवतार का तात्पर्य है। अवरोध जिस प्रकार का होता है, शक्ति का अवतरण भी तदनुरूप और तदानुसार होता है। महाविष्णु सत्ता का पृथ्वी पर तेजोवतरण सूर्य को माध्यम स्वीकार करके होता है, अत: वह भी विष्णुस्थानीय होने के फलस्वरूप विष्णु कहा गया है। पुराणों में प्रति मन्वन्तर इन छ: तत्त्वों के पृथक्–पृथक् नाम दिये गये हैं, यदि उन नामों के अर्थ पर विचार किया जाए तो हम मन्वन्तरों के काल–विज्ञान की भाषा पढ़ने में बहुत कुछ समर्थ हो सकते हैं। 'सुरेश्वर' पद के स्थान पर अनेक स्थलों पर 'इन्द्र' पद का प्रयोग है। इस ***इन्धे भूतानीति वा। 'तद्यदेनं प्राणै: समैन्धंस्तदिन्द्रस्येन्द्रत्वमि'– ति विज्ञायते।। ञ्इन्धी दीप्तौ (रू०आ०) ...दीपयति (द्युतिमन्ति करोति) सोऽयमिन्ध: सन्निन्द्र इत्युच्यते।*** निरुक्त लभ्य अर्थ के अनुसार इन्ध्पद – 'ज्वलन' के अर्थ का वाचक है – इसी से इन्धन पद की निरुक्ति 'ज्वलन' के अर्थ में होती है। ३० करोड़, ६७ लाख, २० हजार वर्षों की दीर्घ यात्रा द्वारा सूर्य के भीतर का ईन्धन तत्त्व ही बदल जाता है – यही इन्द्र का बदलना है। वहाँ पुन: नया 'इन्धन' या 'इन्द्र' उपस्थित होता है। फलत: किरण या ऋषितत्त्व भी बदल जाता है। मण्डल के 'इन्द्र' या इन्धन के बदलने से सूर्य की छहों आभ्यन्तर संस्थाओं का नवीकरण नये मन्वन्तर के सन्दर्भ में होता है।

सृष्टि संकल्पात्मिका है। संकल्प चित्त के स्पन्द का नाम है। अधिब्रह्माण्डीय चित्त जब स्थिर व निश्चल हो जाता है – तब उसके संकल्पात्मक स्वरूप की अभिव्यक्ति नहीं होती। स्पन्दन की इस क्रिया में एक बार पश्चात् गमन होता है, तो दूसरी बार उसके सम्मुख आगमन। उसमें एक बार विकर्षण निर्देशन है, तो द्वितीय बार आकर्षण है। इसमें एक ओर केन्द्र अपसारिणी शक्ति का कार्य है, तो दूसरी बार केन्द्राभिमुखी शक्ति का स्वरूप व्यक्त होता है। सृष्टि की अभिव्यक्ति का भी यही स्वरूप है। एक बार वह अव्यक्त से व्यक्त में आगमन करती है, द्वितीय बार व्यक्त से अव्यक्त की ओर गमन करती है। एक बार विश्व रूप पट का प्रसारण होता है, तत्पश्चात् पुन: उसका संकोच। यहाँ हम इस विश्व के आविर्भाव और तिरोभाव को दोलक के दृष्टान्त द्वारा स्पष्ट करने का प्रयत्न करेंगे। यदि एक केन्द्रस्थ दृढ़ कील पर सूत के द्वारा बाँध कर किसी दोलक को लटका दिया जाए तो दोलक–यन्त्र का स्वरूप प्रस्तुत हो जाता है। जब वह अपने केन्द्रस्थ कील के नीचे लम्बायमान अवस्था में लटका हुआ है, उस समय गति नहीं, वह स्थिर है।

इसे प्रलय समझा जा सकता है। यदि उसे झुला दिया जाए — वह दक्षिण और वाम झूलने लगता है, कुछ काल के पश्चात् स्थिर हो जाता है। इस स्थिरता के तीन कारण हैं — (१) पृथ्वी की गुरूत्वाकर्षण शक्ति, (२) वायु के घर्षण से जनित प्रतिरोधशक्ति और (३) सूत के सम्प्रसारण से जनित तनाव — (प्रतिरोध) शक्ति (टेंशन)। इन तीन शक्तियों के समुदाय से उत्पन्न प्रतिबन्धक न हो तो वह दोलक स्थिर हो जाने के स्थान पर अनन्त काल तक दोलायमान ही रहेगा।

विश्वरूप संकल्पात्मक दोलक के समक्ष इस प्रकार का कोई भी प्रतिबन्धक नहीं। अत: उसकी क्रमाभिव्यक्ति, क्रमपरिणति एवं अन्त में लय पूर्वापर भाव से प्रवाहरूप में गतिशील रहती है। इस सृष्टि-दोलक में कहीं कोई विराम नहीं, विच्छेद नहीं, विश्रान्ति नहीं, यह दोलक अनादि काल से दोलित हो रहा है। भारतीय विज्ञान दर्शन के अनुसार यह सृष्टि अनादि है। शक्तिमान् जिस शक्ति के आश्रय से सृष्टि रचना करता है — यही उसका संकल्प है, इसी का नाम माया है। ऊपर लिखा जा चुका है कि विकर्षणी व केन्द्रापसारिणी—शक्ति एवं केन्द्राभिमुखी—शक्ति के पूर्वा पर भाव से कार्यशील होने पर ही सृष्टि की क्रमाभिव्यक्ति व क्रम परिणति होती है।

सूर्य जब विष्णु चक्र व आकाश गंगा के केन्द्र की एक परिक्रमा ३० करोड़, ६७ लाख, २० हजार वर्षों में पूरी कर लेता है, तब एक मन्वन्तर का काल समाप्त हो जाता है। एक कल्प में १४ मन्वन्तर होते हैं, अर्थात् उभयाश्रित — सूर्य चौदह परिक्रमायें सम्पन्न करता है। भागवत के अनुसार इनके नाम इस प्रकार हैं — (१) स्वायम्भुव, (२) स्वारोचिष, (३) उत्तम, (४) तामस, (५) रैवत, (६) चाक्षुष, (७) वैवस्वत, (८) सावर्णि, (९) दक्षसावर्णि, (१०) ब्रह्मसावर्णि, (११) धर्म—सावर्णि, (१२) रुद्र—सावर्णि, (१३) देव—सावर्णि और (१४) इन्द्र—सावर्णि। प्रथम सात नामों तक कोई मत पार्थक्य नहीं है। विष्णु पुराण की परम्परा के अनुसार १ से १२ नामों तक तो साम्य है, अन्तिम दोनों का नाम रूचि और भीम है, मार्कण्डेयपुराण के अनुसार ये नाम रौच्य और भौत्य हैं।

मन्वन्तर विज्ञान भारतीय ऋषि-चिन्तन की महती मनीषा का एक ऐसा अपूर्व विज्ञान है, जिसकी सहायता से हम ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष के इस ग्रह के भूत, भविष्य और वर्तमान का ऐतिहासिक काल-प्रवाह बड़ी सहजता से जान सकते हैं। किसी भी मन्वन्तर के किसी भी महायुग के किसी भी कालबिन्दु पर पृथ्वी के इतिहास की क्या गति, यति और नियति है — वह इस विज्ञान की सीमा में अलक्षित नहीं। पृथ्वी के भावी दो अरब से भी अधिक अवशिष्ट काल में जीवन का प्रवाह और जैव-विकास का स्वरूप किन—किन घुमावों और परिस्थितियों से होता हुआ गतिशील होगा, उसका आकलन मन्वन्तर विज्ञान के अध्ययन द्वारा जाना जा सकता है।

४०, सोमनाथ लाहिरी सरणी
(टालीगंज सर्कुलर रोड)
न्यू अलीपुर, कोलकत्ता—७०००५३

Confusion in values of terms assigned in micro level of Kal Ganana

● V.M.K. Puri

Introduction

Kal Ganana or time reckoning is a fascinating science in which our Rishi delved in greater depth in order to solve the intricacies of Kal. Enormous literature on this subject exists in our ancient scriptures in Sanskrit. The modern scholars have attempted to understand this branch of science through meticulous research and the results have been published as many books and research papers. During the passage of time, it is quite likely that some confusion has crept in that needs to be clarified suitably.

The term Kal is shrouded with many confusions and superstitions in the society and its general connotation pertains to death only. This erroneous feeling prevalent all over needs to be addressed appropriately.

Jha (1985)[1] has quoted Bhojraj in *Kalmadhav* in which it is explained that Kal originates from the basic tenet of *prakriti* or nature. The relevant shlok or verse from *Kalmadhav* is re-produced below:-

Punso jagataha kritya mayatatatva panchakam bhavati
Kalo niyatishacha tatha kula cha vidya cha ragashcha
Nanavidhashaktimayee sa janayati Kaltatva mayvadao
Bhavibhavadbhootamayam Kalyati jagdesha kaloatah

Five elements including Kal are generated from *maya* or cosmic illusion and its male component is called *purush* for the creation of the Srishti or Cosmos. In other words, many types of powerful eternal nature create elements of Kal. This Kal is an embodiment of future, present and past. It is responsible for reckoning of every worldly creation. Hence, it is known as Kal.

In above shlok or verse, first future, followed by present

and later past has been elucidated. Accordingly, Kal has been illustrated to its root doctrine. The aspect of the future depending upon the present and latter on the past has been advocated. Bhojaraj emphasized the computational aspect of Kal that is mentioned in "*Kalyati jagadesha kaloatah*" component of above shlok. Therefore, this aspect of Kal has been acknowledged as womb of *prakriti* or nature that accounts for *graham* (Planets) and *nakshatra* (asterism) etc. However, it does not refer to its spiritual connation of *nitya* Kal or eternal one which is the embodiment of Supreme Power and is beyond the scope of this publication.

Lokanamantkrit Kalha kaloanyah kalnattamakah
Sa dvidha sthoolasookshamatvan moortashchamoorta ucchcchyate
Pranadi kathito moortastutyadyoamoortasangyakaha[2]

Rishi of Surya Siddhant has further clarified this aspect of Kal. Terminator of all *char* (moveable) and *achar* (immoveable) *lok* or worlds is primarily Kal that is not computable. It is different from the computable Kal that *is unreal. This unreal or practical* Kal possesses two segments namely *sthool* or gross and *sooksham* or subtle; former is also known as *moorta* whereas *sooksham* or subtle is known as *amoorta*. The time taken for breathing and high level of Kal is known as *moorta* while lesser or micro level is called *amoorta.*

Sa Kalh parmanurvaiee yo bhungakte parmanutam
Satoavishaishabhugyastu sa Kalha parmo mahan[3]

According to the above shlok from, Bhagvat Puran, Kal exists in *sooksham* or infinite state of *parmanu* or an atom. The one that enjoys all the stages from extreme *sooksham* to the beginning of Srishti or the Cosmos is the great Kal. It is the embodiment of all *grah* (planets) or *nakshatra* (asterism), stars, and galaxies which are the manifestation of Kal.

In another shlok from the same chapter in Bhagvat, precise value of Kal has been quantified.

Garharakshatarachakrasthah parmanvadina jagat

Samvatsaravsanaina paretyanimisho vibhuh[4]

This shlok is the most significant attempt by the Rishi to quantify Kal. Acharya Shridhar has explained this verse in his commentary that the lowest Maan (value) of Kal is the time taken by Surya (the Sun) to transgress parmanu or atom. The speed of the light of the Sun is 2, 99,792 Km/s (2 lakh, 99 thousand, 7 hundred and 92 kilometers per second). The diameter of hydrogen parmanu (atom) is 1.05832×10^{-8} cm. Therefore, light of the Sun will transgress hydrogen atom in 3.53018×10^{-19} second. To clarify further, it works out to be minutest of the minutest mathematical value that has been attributed to Kal.

Micro Level Kal Ganana

For clear understanding of Kal Maan or time unit at micro level, Rishi or ancient scientists designed various schemes and terms to account for their properties in order to study the subtle details of Kal Ganana, it has been organized into two segments exclusively for the sake of this paper only so that reader could get a clear understanding of the subject. It is further emphasized that this grouping is absolutely an arbitrary one which has no relevance whatsoever to the actual scenario. Consequently, it may not be construed that the groupings followed in this paper has ever been used or even remotely accepted by any of our ancient Rishi.

Consequently, the first segment is micro level of Kal Ganana that deals with such portion of Kal Maan (time unit) that is less than an ahoratra (24 hours or a day). Modern smallest time unit accepted and adopted the world over is a second. In rare cases, this smallest time unit is measured through high precision clocks up to one hundredth part for the purpose of sports like athletics, swimming events etc. Only in 1964, Cesium Atomic clocks were designed and manufactured to measure very small time units.

The second segment is termed as mega level of Kal Ganana that has been designed to include a component of Kal Maan (time unit) that varies from ahoratra (a day) to a year.

In order to delineate different values lower than that of ahoratra (24 hours or a day). Therefore, a few data sets have been selected from the huge pile of information available in order to

delve into various characteristics of micro Kal Maan (time unit).

In order to begin the assessment of micro level time unit data sets, it is but obvious that we first assess what reference is available in Ved. Therefore, Vedic Rishi had assigned terms for this purpose that are given in the following table 1.

Table 1: Micro Level of Kal Ganana by Vedic Rishi

S. No.	Micro Kal or time units	Modern time units
1.	1 Ahoratra = 30 Mahurat	24 hours or Day & Night
2.	1 Mahurat = 15 Kshipra	48 minutes
3.	1 Kshipra = 15 Atheri	3 minutes and 12 seconds
4.	1 Atheri = 15 Idani	12.8 seconds
5.	1 Idani = 15 Uchhawas	1.17th of a second or 0.885 sec.
6.	1 Uchhawas = 15 Prashawas	17.578th of a second or 0.0569 sec.
7.	1 Prashwas = 15 Nimesh	263.67th of a second or 0.0038 sec.
8.	1 Nimesh	3955th of a second or 0.000253 sec.

Thus, it is clear from the above data set that Vedic Rishi designed the lowest values only up to Nimesh level that represents 3955th part of a second (that works out to be 0.000253 second).

Rishi of Atharav Jyotish[5] propounded yet another set of terms to denote various levels of micro Kal Ganana. These terms are enumerated in table 2.

Table 2: Micro Kal Maan or time Units (Atharav Jyotish)

S. No.	Micro Kal or time units	Modern time units
1.	1 Ahoratra = 30 Mahurat	24 hours or a Day
2.	1 Mahurat = 30 Truti	48 minutes
3.	1 Truti = 30 Kala	1 minute and 36 seconds
4.	1 Kala = 30 Luv	3.2 seconds
5.	1 Luv = 12 Nimesh	9.3rd of a second or 0.106667 sec.
6.	1 Nimesh	112.5 or 113th of a second or 0.008889 sec.

Rishi of Atharav Jyotish also preferred Nimesh as the smallest Kal Maan or time Unit but assigned a different value which works out to be 113th part of a second or 0.008889 second.

On the other hand, Rishi of Vishnu Puran has coined a different set of terms to depict their concept of micro level of time units (Kal Maan). The relevant shlok is given below:-

Kashtha panchdashakhyata nimesha munisattma
Kashthastrinshatkala trishuntkala mauhoorattiko vidhih
Taavatsankhyeerahoratram muhoortaiyarmaanusham smritam
Ahoratrani taavanti Masah pakshdvyatmakah[6]

The terms of above shlok are listed in the following table 3.

Tabel 3 : Micro level of Kal Maan or time units (Vishnu Puran)

S. No.	Micro Kal or time units	Modern time units
1.	1 Ahoratra = 30 Mahurat	24 hours or a Day
2.	1 Mahurat = 2 Nadika	48 minutes
3.	1 Nadika = 15 Kala	24 minutes
4.	1 Kala = 30 Kashtha	1 minute and 36 second
5.	1 Kashtha = 15 Nimesh	6.4 seonds
6.	1 Nimesh	2.34th of a second or 0.42667 second

Like previous Rishi, the term for the lowest value has been retained as Nimesh but its value has been elevated to 2.34th part of second or 0.426667 second.

Kautilya[7] delved into this fascinating aspect of Kal Ganana and came out with a hybrid terminology that imbibed a different set of values. His data is given in table 4.

Table 4 : Micro level of Kal Maan or time Units (Kautilya's Artha Shastra)

S. No.	Micro Kal or time units	Modern time units
1.	1 Ahoratra = 15 Mahurat	24 hours or a Day
2.	1 Mahurat = 2 Nadika	1 hour and 36 minutes
3.	1 Nadika = 40 Kala	48 minutes
4.	1 Kala = 30 Kashtha	1 minutes and 27 seconds
5.	1 Kashtha = 5 Nimesh	2.9 seconds
6.	1 Nimesh = 2 Lum	1.7th of a second or 0.58 sec.
7.	1 Luv = 2 Truti	3.4th of a second or 0.29 sec.
8.	1 Truti	6.8 or 7th of a second or 0.145 sec.

Kautilya coined a completely a different term to address the lowest value of a time unit, he called Truti which has been assigned 7th part of a second or 0.145 second.

Bhaskaracharya[8], notwithstanding, dealt the subject in a very subjective manner and described its nuances. Therefore, he adopted a different terminology in describing Micro level of Kal Ganana (time reckoning). He postulated very minute Kal Maan (time unit) during analysis of this component. His data set is enumerated in table 5.

Table 5 : Micro level of Kal Maan or time Units of Bhaskaracharya

S. No.	Micro Kal or time units	Modern time units
1.	1 Ahoratra = 15 Mahurat	24 hours or a Day
2.	1 Mahurat = 2 Ghati	48 minutes
3.	1 Ghati = 30 Kala	24 minutes
4.	1 Kala = 30 Kashtha	48 seconds
5.	1 Kashtha = 18 Nimesh	1.6 seconds
6.	1 Asu = 45 Nimesh	4 seconds
7.	1Nimesh = 30 Tatpar	11.25th of a second or 0.0889 seconds
8.	1 Tatpar = 100 Truti	337.5th of a second or 0.00296 second
9.	1 Truti	33,750th of a second or 0.0000269 second

The perusal of above table reveals that Bhaskaracharya was the first scientist who recorded data even lower than Nimesh level and found that Truti is the smallest time unit of Micro level of Kal Ganana. He has defined it as time taken to needle across a lotus leaf. He further suggests Asu (or Pran) as a cognizable smallest unit which is equivalent to length of breath of a healthy man that was found to have been calculated as 4 seconds.

At this stage, it is striking to record that an ahoratra or 24 hours or a day, consists of 21,600 Asu (or Pran). This figure has very interesting connotations since one rotation of the Earth around its polar axis, takes place in 21,600 Asu. Moreover, there are 21,600 seconds in a circle or an ellipsoid. Also, he used yet another term Tatpar that has been defined as the time taken by a healthy sleeping man to open his eyes on awakening from sleep. It represents 100th part of a Truti and almost 1000th part of a *Lagan* (or an ascendant).

Ved VYAS[9] was yet another Rishi who analyzed this problem in an absolutely different perspective. He did not hesitate to employ yet another set of hybrid terminology that is purported to be advance in nature. He adopted completely a different approach in order to analyze this subtle phenomenon. He carefully scrutinized the methodology of various predecessor scientists and found some missing links that might have emerged due to perhaps astronomical behavior of heavenly bodies. Therefore, Rishi Ved Vyas was able to reach perceptibly the lowermost micro levels in Kal units ever recorded by any human being. The entire sequence of various terms used to describe micro level of time reckoning is listed in table 6.

Table 6 : Micro level of Kal Maan or time Units of Ved Vyas

S. No.	Micro Kal or time units	Modern time units
1.	1 Ahoratra = 30 Mahurat	24 hours or a Day
2.	1 Mahurat = 2 Nadika	48 minutes
3.	1 Nadika = 15 Laghu	24 minutes
4.	1 Laghu = 15 Kashtha	1 minutes and 36 seconds
5.	1 Kashtha = 15 Kshem	6.4 seconds
6.	1 Kshem = 3 Nimesh	1.28 seconds
7.	1 Nimesh = 3 Luv	2.34th of a second or 0.42667 sec.
8.	1 Luv = 3 Vedh	7.03rd of a second or 0.14222 sec.
9.	1 Vedh = 100 Truti	2.109th of a second or 0.047407
10.	1 Truti = 3 Tresarenu	2109th of a second or 0.00047407 sec.
11.	1 Tresarenu = 3 Anu	6328th of a second 0.00015802 sec.
12.	1 Anu = 2 Parmanu	18984th of a second or 0.000052675 sec.
13.	1 Parmanu	37968.75 or 37969th of a second or 0.000026337 sec.

The Rishi used a new term Parmanu for the lowest value of Kal Maan (or time unit) that was calculated to be 37,969th part of a second or 0.000026337 second. Let it may be emphasized again that this value happens to be the lowest ever unit recorded for Kal Maan (or time unit) by any scientist pertaining to any civilization.

Lowest Value of Kal Maan (Time Unit)

Enormous data concerning micro level of Kal Ganana exists but in above pages only a sample of various epochs has been taken to record certain salient observations. The perusal of above tables reveals that no ambiguity of any sort exists in these data sets. On the other hand, it exhibits merely a scientific thought that was prevalent as a result of voluminous research carried out by our

Rishi during their respective times. Arrangement of data sets in various tables has been done in this fashion purposely by the author so that additional information could emerge on analysis.

The values of Kal Maan (or time Unit) of ahoratra (or 24 hours or a day) was adopted to be the same by all Rishi so that it could be safely taken as a base value for the purpose of further analysis of data sets. Vedic Rishi designed 7 time units within an ahoratra or 24 hours. However, it is interesting to record that the lowest value of the time unit is not uniform but varies from one scientist to another. The lowest value of time Unit of Vedic Rishi is Nimesh that is 3955th part of a second or 0.000253 seconds whereas that of Bhaskaracharya is Truti which works out to be $33,750^{th}$ part of a second or 0.0000269 second. Moreover, the lowest ever value of time unit has been attributed to the one indicated by Rishi Ved Vyas, as postulated in Bhagvat Puran. He designed the term Parmanu which is $37,969^{th}$ part of a second or 0.000026337 second. It may be added that this is the lowest value of micro level of Kal Maan (or time unit) recorded by our Rishi or scientists. Thus, these Rishi of different times designed different terms to express dissimilar connotations for the lowest value of a second. Is it not mind- boggling?

Clarification of Various Critical Terms Designed in Micro Level of Kal Ganana

At this stage, it will appear that a lot of confusion has crept in the values of terms like Nimesh, Truti etc. It would be appropriate to undertake further research so that no ambiguity may ever remain in the treatment of this aspect of the subject. This approach will further elucidate the finer aspects of these terms that project a clear cut and incisive values to the various terms designed by our Rishi. These data sets give an insight to the development of knowledge on this level of time unit (Kal Maan). It will also set aside any misgivings that might arise about the usage of either of these terms in a different sense at a later stage. Therefore, an in-

depth study was undertaken in order to under stand its implication and analysis was taken up by the author in order to clear any misgivings.

The term **Truti** is widely known amongst scientists/ scholars who hereby mostly "believe" that it represents the smallest unit of Kal Maan. This perception is not based on any sound footings. It is admitted that Bhaskaracharya did attribute his lowest value to this term and that might have given scope for any sort of ambiguity or misconception.

Further, out of six Rishi of different span of time, only four scientists have utilized this term but none of them have attributed any common value of Kal Maan (or time Unit) to it. Hence, the largest value allotted to Truti is 1 minute 36 seconds that was provided by Rishi of Atharav Jyotish, which is followed by 6.8^{th} part of a second or 0.145 second by Kautilya. However, Ved Vyas had assigned Truti the value of 2109th part of a second or 0.00047407 second. Finally, it was only Bhaskaracharya who postulated the penultimate lowest value to this term of the order of $33,750^{th}$ part of a second or 0.0000269 second. Therefore, it is believed that aforesaid analysis would clear any sorts of doubts that might have persisted.

Mahurat is the term that finds itself addressed in all the above data sets pertaining to six Rishi. Nevertheless, it is interesting to notice that all five Rishi or scientists have adopted a value of 48 minutes except Kautilya who assigned it a value of 1 hour and 36 minutes.

Similarly, the term **Nimesh** also finds favour with all six Rishi. Its highest value of less than a second or 1.7^{th} part of a second or 0.58 second has been assigned by Kautilya in his Arth Shastra. It is followed by a value of 2.34^{th} of a second or 0.42667 second that was assigned by Rishi of Vishnu Puran and Veda Vyas. On the other hand, Bhaskaracharya allotted the value of 11.25^{th} part of a

second or 0.0889 second while Rishi of Atharav Jyotish assigned it a value of 113th part of a second or 0.008889 second. On the other hand, Vedic Rishi provided it with the lowest value of 3955th part of a second or 0.000253 second. Notwithstanding, it is quite evident from the above data set that even Vedic Rishi had gone as low as 3955th part of a second or 0.000253 second for undertaking various astronomical and/or astro-physical calculations.

Moreover, the term **Kashtha** also finds favour with 4 out of 6 Rishi and assigned values ranging from 6.4 seconds (Rishi of Vishnu Puran and Veda Vyas) to 2.9 seconds (Kautilya) and thereafter to 1.6 seconds (Bhaskaracharya).

On the Other hand, remaining two terms amongst the common ones, are Nadika and Luv that were coined by only three Rishi. The value of Nadika given by Rishi of Vishnu Puran and Ved Vyas happened to be similar which works out to be 24 minutes whereas Kautilya had assigned 48 minutes to it.

Finally, Luv also finds favour with only three scientists namely Ved Vyas, Rishi of Atharav Jyotish and Kautilya. This term was used by these Rishi to indicate value of Kal Maan or time Unit which is less than a second. Its highest value was assigned by Kautilya (3.4th part of a second or 0.29 second) which is followed by Ved Vyas (7.03th part of a second or 0.14222 second). Rishi of Atharav Jyotish attributed it the lowest value of 9.3th part of a second or 0.106667 second.

Conclusions

In the end, The above referred data sets clearly brings out appellations of micro level of time reckoning that varies from ahoratra or a day to as low as 0.000026337 second which can also be expressed as 37,969th part of a second. Isn't it amazing?

In order to ascertain the above referred values assigned to various terms by Rishis of different time span, the entire data has been summarized in the following table 8.

Table 8 : Comparitive Data on Micro level time units by Various Rishi

Value	Vedic Rishi	Atharav Jyotish	Vishnu Puran	Bhaskar Acharya	Ved Vyas	Kautilya
Mahura	48 mt	48 mt	48 mt	48 mt	48 mt	1 hour 36 mt
Truti	-	1 mt and 36 sec.	-	33750th of a sec. or 0.000027 sec.	2109th of a sec. or 0.00047 sec.	6.8th of a sec. or 0.145 sec.
Kala	-	3.2 sec.	1mt. 36 sec.	48 sec.	-	1 mt. 27 sec.
Nimesh	3955th of a sec. or 0.000 253 sec.	113th of a sec. or 0.0089 sec.	2.34th of a sec. or 0.427sec.	11.25th of a sec or 0.0889 sec.	2.34th of a sec. or 0.427 sec.	1.7th of a sec. or 0.58 sec.
Luv	-	9.3th of a sec. or 0.107 sec.	-	-	7.03th of a sec. or 0.142 sec	3.4th of a sec. or 2.9 sec.
Kashtha	-	-	6.4 sec.	1.6 sec.	6.4 sec.	2.9 sec.
Nadika	-	-	24 mit.	-	24 mit.	48 mit.
Parmanu	-	-	-	-	37,969th of a sec. or 0.00026337 sec.	-

Finally, it emerges that various scientists used these terms in specific situations. For example, when we refer to Truti, it will be imperative to clarify which Rishi has used this term. The value of Truti of Atharv Jyotish differs significantly from that of Bhaskaracharya or Kautilya. Therefore, it is always essential that the name of the Rishi is prefixed with the term used in Kal ganana in general and micro Kal ganana in particular.

Selected References

1. Jha, Damodar (1985): *Bhartiya Kal Ganana Ki Roop Raikha* or An Outline of Indian time Calculations; *Yogkshema Pratishthan*, Delhi
2. Surya Siddhant 10 & 11
3. Bhagvat Puran 3.11.4
4. Bhagvat Puran 3.11.13
5. Atharv Jyotish pp 110
6. Vishnu Puran 1.3.8 9
7. Kautilya Arth Shastra, 2.20.41-42
8. Bhaskaracharya, Siddhant Shiromani; *Goadhyay, Bhuvan Kosh*
9. Ved Vyas Bhagvat Puran 3.11.1-38

Director (Rtd) Geological Survey of India
Dharamshala, Distt. Kangra (H.P.)
E-mail : vmk1941@yahoo.co.in

जगत विभूति

भक्त राज शुकदेव

● प्र. ग. सहस्रबुद्धे

हस्तिनापुर का राजा परीक्षित कुम्हलाये मुख से अपने महल में बैठा था। सामान्यत: वह सदाचारणी था। अच्छे बुरे का विचार रखता था। नित्य अच्छे काम ही करता था। परन्तु उसके हाथ से एक बार बहुत बड़ी गलती हो गई। इस से अब वह पश्चाताप कर रहा था।

दुर्घटना इस प्रकार हुई थी। राजा परीक्षित एक बार शिकार के लिए वन में गया। उस दिन उसके हाथ कोई शिकार नहीं लगा। हिरणों के पीछे दौड़ता भागता वह बहुत थक गया। उसे बहुत प्यास लगी थी। वह पानी की खोज में घूमने लगा। वह शमीक ऋषि के आश्रम में पहुंचा। उसने कहा,'' मुझे पानी चाहिये। मैं प्यासा हूँ। क्या मुझे पानी मिलेगा?''

सामने आसन पर ध्यानमग्न ऋषि बैठे थे। वे न हिले न डुले। न उन्होंने आँखें खोली, न वे कुछ बोले। बाह्य सुध बुध खोकर वे आत्मलीन हो गये थे। यद्यपि परीक्षित धर्मपालनशील तथा सदाचारी था, पता नहीं कैसे, इस समय उसका अंहकार जागृत हुआ। उसने मन में कहा, '' मैं इतना बड़ा राजा यहाँ आया हूँ और कोई मेरा स्वागत तक नहीं कर रहा है। मैं प्यासा हूँ और मुझे पानी तक नहीं मिल रहा है। यह भी क्या ऋषि है? यह दाँभिक है, ढोंगी हैं।''

राजा झल्लाता हुआ बाहर निकला आंगन में ही उसे एक मरा हुआ साँप दिखाई दिया। उसने उसे अपने धनुष के अग्र से उठाया और ऋषि के गले में डाल दिया।

राजा के जाने के थोड़ी ही देर बाद शमीक पुत्र शृंगी वहां आ पहुँचा। उससे अपने पिता का अपमान नहीं देखा गया। हाथ में जल उठा कर उसने शाप दिया। ''जिस किसी ने यह गंदा काम किया है उसकी आज से सातवें दिन मृत्यु होगी। मेरी प्रेरणा से तक्षक नाग उसे दंश करेगा।

अनेक लोग वहाँ आ पहुँचे। शृंगी उच्च स्वर से बोल रहा था और अपना क्रोध प्रकट कर रहा था। वहां हो-हल्ला सुनकर ऋषिवर्य ने धीरे-धीरे आँखें खोली और उन्होंने पुत्र से पूछा ''यह सब क्या हो रहा है?''

शृंगी ने पूरा वृतान्त कह सुनाया। यह सुनकर शमीक ऋषि ने खेद प्रकट किया।

शाप की बात परीक्षित राजा के कानों तक पहुँच गयी। राजा अपने किये पर पश्चात्ताप कर ही रहा था तब उसे शाप का पता चला। राजा मृत्यु का स्वागत करने के लिये सिद्ध हुआ।

शुक का आगमन तथा भागवत कथा

गंगा नदी के किनारे पर बिना खाये पिये रहने का तथा गंगा में देह विसर्जित करने का उसने निश्चय किया। उस समय श्री कृष्ण चरित्र सुनने की इच्छा उसके मन में तीव्रता से जाग उठी। अत्रि, वसिष्ठ, शरद्वान, भृगु, अंगिरा, उतथ्य, देवल, भारद्वाज, गौतम, पिप्पलाद, नारद जैसे अनेक ऋषिमुनि साधु संत तथा प्रबुद्ध नागरिक वहां एकत्रित होने लगे। कोई समाचार पूछते थे, कोई सहानुभूति दिखलाते थे, कोई प्रशंसा करते थे, कोई आध्यात्मिक उपदेश देते थे। परंतु राजा के मन में जो श्रीकृष्ण चरित्र सुनने की इच्छा जगी थी, वह कोई भी पूर्ण नहीं कर पा रहा था। कहते हैं कि मनुष्य के मन में जब ऐसी कोई तीव्र शुभेच्छा जगती है तब भगवान उसे अवश्य पूर्ण करते हैं। वैसा ही परीक्षित के बारे में हुआ।

परीक्षित ने सब को हाथ जोड़कर कहा,'' ऋषिपुत्र के शाप को मैं वरदान मानता हूँ। मृत्यु तो कभी न कभी निश्चित ही आती है। परन्तु यह गंगातट वास और सब लोगों का सहवास, यह मेरा अहोभाग्य है। मेरी आप से प्रार्थना है कि मेरा चित्त अब ईश्वर चरणों में लगा है। वह वहीं पर स्थिर हो जाये, ऐसा ही वार्तालाप कीजिये। आप ईश्वर भजन करें, मैं उसे सुनता रहूँगा। अगला जन्म मुझे कहीं भी प्राप्त हो, पर वहाँ भी मेरा मन ईश्वर भक्ति में लगा रहे और मुझे सत्संग मिलता रहे।''

ऐसा निश्चय प्रकट कर परीक्षित ने अपने राज्य का भार पुत्र जनमेजय पर सौंपा और गंगा नदी के दक्षिण तट पर उसने अपना आसन तैयार करवाया। वहाँ पर वह उत्तराभिमुख होकर बैठा। उस समय उस पर स्वर्ग के देवता तथा गंधर्वों ने पुष्प वर्षा की। आकाश में नगाडे बजने लगे।

इसी समय व्यासपुत्र शुक्राचार्य वहाँ आ पहुँचे। सामान्य जन उन्हें पागल समझते थे। उन्हें न खाने पीने की सुध थी न कपड़ों की। वे आत्मानंद में झूम रहे थे।

उनकी आयु सोलह वर्ष की थी। उनका शरीर कोमल था। उनकी बड़ी-बड़ी आँखें सुन्दर थी। उनकी नासिका सरल थी। कान प्रमाणबद्ध थे। बुद्धिमत्ता निदर्शक उनका भाल विशाल था। वे आजानुबाहु थे। उनके लम्बे काले केश अस्त-व्यस्त थे। उनके वहाँ पहुँचते ही सब ऋषिगण उठ खड़े हुए। सब ने उनका आदर स्वागत किया। उस समय ऐसा लगा मानों तारागणों में पूर्णचन्द्र आ पहुँचा है।

अविचल शांति का अधिपति तथा अकुंठित बुद्धि का स्वामी शुकमुनि जब आसनस्थ हुए तब राजा परीक्षित उनके पास पहुँचे और हाथ जोड़कर तथा मस्तक नवाकर कहने लगे ''हे ऋषिवर, आपके आगमन से मैं धन्य धन्य हुआ। हे योगिराज, भगवान विष्णु के सामने राक्षस टिकते नहीं है, सूरज के सामने अंधेरा रहता नहीं हैं, ठीक उसी

प्रकार आपके सहवास में पातक भस्म हो जाते हैं। मुझे लगता है कि मुझ पर कृपा करने के लिए आप यहाँ पधारे हैं। मेरा मृत्यु काल निकट आ चुका है। ऐसी परिस्थिति में मुझे क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये, इसका कृपया बोध करवाइये''।

शुक्राचार्य ने कहा,'' हे राजा, तुम्हारा प्रश्न उचित है। इस दुनिया में अधिकांश लोग केवल पेट भरने की बात करते हैं। लाखों ऐसे हैं जो निद्रा और आलस्य में जिंदगी बिता देते हैं। मनुष्य जीवन का सार्थक मोक्ष प्राप्ति में है। परमेश्वर का गुणानुवाद करना, उसी की लीलाओं का श्रवण मनन तथा चिंतन करना मोक्ष प्राप्ति का सुलभ तथा सुगम उपाय है। ''

इस प्रकार से प्रारंभ करते हुए शुक जी ने परीक्षित को पूरा भागवत सुनाया। भागवत में दशावतारों की कथा है। ध्रुव प्रह्लाद आदि भक्तों एवं अनेक सत्पुरुषों के चरित्र हैं। मुख्यत: उसमें बाललीला से लेकर परलोक गमन तक श्रीकृष्ण चरित्र का वर्णन है। श्रीकृष्ण का उद्धव को दिया हुआ उपदेश है। संपूर्ण ग्रन्थ भक्ति रस से ओतप्रोत है। विश्व में इतना, सुन्दर, रोचक, आकर्षक, मार्गदर्शक तथा हितकारक दूसरा कोई ग्रन्थ नहीं है।

जन्म तथा शिक्षा

वेदव्यास कृष्ण द्वैपायन ने जाबालि की कन्या वटिका से विवाह किया। विवाह होकर अनेक वर्ष बीते परन्तु उन्हें कोई संतान नहीं हुई। वटिका बहुत उदास रहने लगी। तब व्यासजी ने हिमालय में जाकर उग्र तपश्चर्या की ओर भगवान शंकर को प्रसन्न कर लिया। भगवान शंकर ने उन्हें वर दिया। '' जब तुमने पुत्र की इच्छा से मेरी आराधना की है तब तुम्हें मेरे जैसा ही वीतराग ईश्वर भक्त तथा उन्मत पुत्र प्राप्त होगा।''

व्यास जी अपने आश्रम में वापिस आ गये। पुत्र प्राप्ति की कल्पना मात्र से वटिका, जिसका नाम घृताची और शुकी भी बताया जाता है, बहुत प्रसन्न हुई। प्रत्यक्ष पुत्र प्राप्ति के बाद धूमधाम से आनंदोत्सव मनाया गया। पुत्र का नाम शुक रखा गया। शुक अपनी बाल लीलाओं से तथा बुद्धिजन्य चमत्कारों से सबको हर्षित एवं चकित करने लगा।

छठवें वर्ष में उसका उपनयन संस्कार हुआ। स्वयं शिवजी ने उसे जनेऊ पहनाया। इन्द्र ने उसे शोभायमान वस्त्र पहनाये और उसके हाथ में कमंडलु दिया। देवों के गुरु बृहस्पति उसके विद्यागुरु बने। उन्होंने उसे वेद, उपनिषद तथा इतिहास आदि विषय पढ़ाये। स्वयं व्यासजी ने उसके लिए ब्रह्मसूत्र लिखे, उसे मोक्ष धर्म सिखाया। अध्यात्मशास्त्र पढ़ाने के बाद व्यास जी ने अपने पुत्र से कहा, '' देखो बेटा, मैंने तुम्हें केवल शाब्दिक ज्ञान कराया है। परंतु आध्यात्मिक व्यवहार का प्रत्यक्ष उदाहरण देखना हो और इन सूत्रों का गर्भितार्थ समझना हो तो तुम्हें मिथिला जाना पड़ेगा।''

शुक ने पुछा,''पिताजी मैं मिथिला किसलिये जाँऊ? क्या वहाँ कोई परविद्या

का ज्ञाता रहता है? आश्चर्य है कि अध्यात्मिक अधिकार होकर भी वह वन में, आश्रम में नहीं अपितु नगर में रहता है। ''

व्यास जी ने कहा,''वहाँ मिथिला नरेश जनक है। उनके पास जाकर उनका शिष्य बनकर तुम्हें वास्तविक अध्यात्म विद्या सीखनी होगी।''

शुक ने कहा,''ठीक है, मैं कल ही मिथिला जाता हूँ।''

शुक जब जाने को सिद्ध हुआ तब पिता व्यासजी ने कहा,''देखो बेटा, तुम गुरु के पास जा रहे हो, इतना ध्यान रखना कि मैं तो सिद्ध हूँ, योगी हूँ, आकाशमार्ग से अल्पसमय में वहाँ पहुँचूंगा, ऐसा कभी न सोचना। गुरु के पास पैदल ही जाना चाहिये। फिर उनका हमारा दूसरा भी नाता है। वे हमारे पोषक हैं। हम उनके पोष्य हैं। किसी प्रकार का गर्व मन में न आने देना। उनका उपदेश ध्यान लगाकर सुनना और तदनुसार आचरण करना सीखो। ''

शुक ने कहा,''पिता जी, आपने जैसा कहा है वैसा ही करूँगा। आप निश्चिंत रहिये।''

राजा जनक से भेंट

शुक मिथिला के मार्ग पर चलने लगे। परंतु उसी समय अंहकार ने उनके मन में प्रवेश किया। ''मैंने इतनी अल्प आयु में कितनी तो विद्याएँ सीख ली हैं। वेदवेदांग मुझे कंठस्थ हैं। सिद्धियाँ वश में हैं। कठोर व्रत मैंने किये हैं। बड़-बड़े ऋषि मुनि मेरी सराहना करते हैं। और अब मैं जा रहा हूँ एक राजा के पास। राज प्रासाद में रहने वाले, जरी रेशमी वस्त्र पहनने वाले, सुवर्णालंकारों से लदे, रत्नों से जगमगाता मुकुट पहने, भोग विलासों में डूबे राजा के पास अब मुझे जाना है। राजागण ऋषियों के चरण धोते हैं। ऋषिगण राजा के सामने झुकते नहीं है। क्या करें? पिता जी की आज्ञा है तो जाना ही पड़ेगा.....

उन्होंने नदियों का तथा पर्वतों का उल्लघंन किया अनेक वन उपवन पार किये तब वह विदेह देश में पहुँचे। विदेह इस नाम से ही वे प्रभावित हुए। वहाँ के वातावरण ने उनके मन को बदलना प्रारम्भ किया। उनका अंहकार नष्ट होने लगा। नम्रता भाव जागने लगा। अपने मन का यह परिर्वतन देख शुक प्रसन्न हुए। उनका शरीर बार-बार रोमाचिंत होने लगा।

वे राजधानी मिथिला नगरी में आये और सीधे राजप्रासाद में जाने लगे। द्वारपालों ने उन्हें वहीं रोक लिया। '' कौन हो, कहाँ से आये हो? क्या काम है? प्रार्थनापत्र दिया है क्या? अनुमति प्राप्त की है क्या? राजा से मिलने की योग्यता रखते हो क्या?'' आदि अनेक प्रश्न द्वारपाल ने पूछे।

शुक नतमस्तक हो चुपचाप खड़े रहे। मैं भी कुछ हूँ, यह भाव उनके चित्र से जाता रहा। उनका मुखमंडल कुछ निराली आभा से चमक उठा। भूख प्यास के शारीरिक कष्टों की चिन्ता न करते हुए शुकदेव पूरे एक दिन वहाँ खड़े रहे। तब वहाँ का द्वारपाल

प्रमुख उनके सन्मुख हाथ जोड़ कर खड़ा हुआ। उसने कहा, ''मोक्ष मार्ग का प्रथम द्वार आप के लिये खुल गया है। आईये मैं आपका स्वागत करता हूँ।''

शुक प्रथम द्वार में से प्रविष्ट होकर आगे बढ़े । उस कक्ष में कुछ भी नहीं था। मानो वह बोध दे रहा था कि इस दुनिया में मेरा कुछ नहीं है। खाली हाथ आना है, खाली हाथ जाना है। परन्तु मनुष्य अकारण मायामोह में फंसता है और ''मेरा मेरा'' करता रहता है। दूसरे द्वार पर शुक को फिर से पूरे एक दिन खड़े रहना पड़ा। वहां उन्होंने अपने मन से आसक्तियों को निकाल दिया। तब सामने का दूसरा कपाट अपने आप खुल गया।

वहाँ राजा का मंत्री उपस्थित हुआ। उसने शुक को माला इत्यादि पहनाकर तथा गायनादि के साथ स्वागत किया और शुक को उच्चासन पर बैठाया। वहाँ पर अनेक सुन्दरियां आई। उन्होंने अपने शृंगारिक अभिनय तथा नृत्य गायन से शुक को मोहित करने का प्रयास किया। वे सब शुक से मधुर मधुर बातें करने लगीं। परन्तु शुक का मन जरा भी विचलित नहीं हुआ। वे एकाग्रचित्त अगले द्वार पर जा खड़े हुए। वे सब को कहते रहे ''क्षमा कीजिये। आप का नृत्यगान आदि सुन्दर है परन्तु मोक्ष मार्ग परम सुन्दर है। वहीं मेरा लक्ष्य है।''

शुक की दृढ़ता देख सामने का तीसरा कपाट खुल गया। फिर से एक मन्त्री ने बड़े समारोह के साथ उनका स्वागत किया। उस कक्ष में रंग—विरंगे पक्षी थे। वहाँ मोर नाच रहे थे, कपोत प्रणय क्रीड़ा कर रहे थे। ''ॐ नमः शिवाय'', ''तत्वमसि'', ''सर्वखल्विदं ब्रह्म'', ''अहं ब्रह्मास्मि, ''''ईशावास्यामिदं सर्वं'' इन आध्यात्मिक वाक्यों का वहाँ उच्च स्वर में उद्घोष हो रहा था। वे सब पिंजड़ों में थे। मंत्री महोदय पिंजड़ों के दरवाजे बार—बार खोलते थे और कहते थे'' पक्षियों, उड़ जाओ और नील गगन में सैर संचार करो'' परंतु वे बार-बार पिंजड़े में घुसते थे, वहाँ के फल इत्यादि खाते थे और वहीं रहने में आनंद मानते थे।

वह देखकर शुक के मन में विचार आया, हमारा यह वेद उपनिषद् आदि का पठन तोतारटन्त जैसा ही है। हम उन महावाक्यों के अर्थ की ओर भी ध्यान नहीं देते, फिर उन्हें आचरण में लाना बहुत दूर की बात है। ग्रथों के पठन मात्र से मनुष्य बड़ा नहीं होता। यह भाव शुक के मन में जागते ही अगला चौथा कपाट खुल गया।

पाँचवा कक्ष तितिक्षा अर्थात् सहनशीलता का था। छठा निष्काम कर्मयोग का था और सातवाँ अनन्य भक्ति का था। प्रत्येक कक्ष में उन्हें एक दिन रहना पड़ा। प्रत्येक के समाने दिन-रात खड़े रहना पड़ा। सात कक्ष लाँघने के बाद तथा कड़ी परीक्षाएँ देने के बाद जब सामने का कपाट खुला तब वहाँ राजर्षि जनक खड़े थे। उस तेजस्वी वीतराग को, भक्ति ज्ञान कर्म समुच्चय को, शुक ने अपने आप ही पहचाना। राजर्षि जनक के चरणों पर साष्टांग दण्डवत् किया। वे उनके चरणें से चिपट गये। वे कहने लगे, ''गुरुदेव मुझे, क्षमा कीजिये। मुझ पर दया कीजिये। मुझे मोक्ष का उपाय बताइये। मुझे परमज्ञान दीजिये।''

राज जनक ने शुक को उठाया और गले लगाया। प्रेमादर पूर्वक उन्हें उच्चासन

पर बैठाकर उनका पूजन किया। उसके बाद उन्होंने शुक को जो उपदेश दिया उसका सारांश इस प्रकार है : (१) वर्णाश्रम धर्म का पालन करो (२) यह सीढ़ियाँ है। जो एकदम से ऊँची उड़ान भर सकता है, उसके लिये धीरे-धीरे रेंगना आवश्यक नहीं है। (३) परब्रह्म सब के हृदय में है। ध्यान धारणा से यह ज्ञान प्राप्त हो सकता है। (४) जिसको किसी से भय नहीं लगता और जो किसी से डरता नहीं, समझो कि उसे ब्रह्म प्राप्ति हो गई। (५) जो निरीच्छ है, जो किसी का द्वेष नहीं करता, कभी किसी का अहित करने की नहीं सोचता, मान लो कि वह ब्रह्मरूप हो गया है। स्तुति निंदा, सुख दु:ख, शुभ अशुभ, प्रिय अप्रिय, जन्म मरण, सोना और मिट्टी, लाभ अलाभ, इन द्वंद्वों के जो परे हो जाता है उसे अवश्य ब्रह्म प्राप्त हो जाता है। .....हे गुरुपुत्र! वस्तुत: तुम्हारी योग्यता बहुत बड़ी है। जो कुछ तुम जानते हो उसी को मैंने तुम्हें समझाया है।''

गुरु का उपदेश सुनते-सुनते शुक का मन तदाकार हो गया। उसने गुरूदेव को साष्टांग दण्डवत् प्रणाम किया। गुरु का आशीर्वाद लेकर वह उठा और उनकी की अनुमति लेकर वह पिता कृष्ण द्वैपायन व्यास के पास पहुँचा। पुत्र का मुखमण्डल देखकर ही व्यासजी पहचान गये कि इस पर गुरु कृपा हो गई है।

व्यासजी ने पुत्र से कहा, ''बेटा शुक, थोड़े ही दिन पूर्व यहाँ नारदजी पधारे थे। उनसे आदेश पाकर मैंने श्रीमद्भावगत ग्रथं की रचना की है। मैं चाहता हूँ कि तुम उसका पठन करो।

गृह त्याग

शुकदेव ने श्रीमद्भागवत इतनी तल्लीनता से पढ़ा कि एक बार पढ़ने से ही वह उन्हें कण्ठस्थ हो गया। भक्तों की कथाएँ पढ़ते-पढ़ते वे तदाकार तथा तदात्म हो जाते थे। श्रीकृष्ण की बाल लीलाएँ वे बार-बार पढ़ते थे और लगता था कि इन्हें निरंतर पढ़ता ही रहूँ। वे बालगोपाल कृष्ण के साथ नाचने कूदने हँसने बोलने लगते थे। भगवान के उद्धव को दिये उपदेश को पढ़ते समय वे परब्रह्म से एकरूप हो जाते थे। श्रीकृष्ण के परलोक गमन के प्रसंग से वे बहुत दुखी होते थे रोने लगते थे और खाना पीना छोड़ देते थे। वे हर समय कृष्ण का ध्यान और उनकी लीलाओं का गान करने लगे। किसी ने बजाई मुरली की धुन सुनते ही वे तन्मय हो जाते थे। आकाश में छाये काले बादलों को देखते ही उन्हें घनश्याम कृष्ण दिखने लगते थे और वे मनमयूर के समान नाचने लगते थे। गाय को देखते ही वे उसके गले में बाँह डालते थे। और पूछते थे ''कृष्ण कहां है?'' वे तो हर समय तुम्हारे पीछे रहते हैं, उन्हें तुम कहाँ छोड़ आई हो? ठहरो मैं उन्हें खोजने जाता हूँ.....''

एक दिन व्यास अपनी पत्नी के साथ अपने कक्ष में वार्तालाप कर रहे थे तब शुक वहाँ प्रविष्ट हुए और उन्होंने कहा, ''पिताजी प्रणाम! मैं उन्हें खोजने जा रहा हूँ ... मैं जा रहा हूँ....।''

व्यासजी उठकर खड़े हुए। उन्होंने कहा ''यह क्या है बेटा, तुम किसकी खोज

करना चाहते हो? कहाँ जा रहे हो? कब लौटोगे? यह क्या? तुमने तो ठीक से वस्त्र भी नहीं पहने हैं। ठहरो मैं आता हूँ...।''

पर शुकदेव ठहरे नहीं। उन्होंने मुड़कर पीछे देखा भी नहीं। वे चलने लगे तीव्र गति से चलने लगे ''ठहरो, ठहरो मुझे छोड़कर न जाओ''

परन्तु शुक ने उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया। पेड़-पौधों ने ही शाखाएं हिलहिलकर व्यास जी को उत्तर दिया, ''कैसे तुम पिता हो जो अपने पुत्र के सत्कार्य में बाधा डालने का प्रयास कर रहे हो।''

व्यासजी लौट पड़े। शुकदेव भ्रमण करते-करते हस्तिनापुर पहुँचे और अनपेक्षित वरदान के समान राजा परीक्षित के सम्मुख उपस्थित हुए। गोदोहन के लिये जितना समय लगता है उतना समय भी वे कहीं रुकते नहीं थे। परन्तु परीक्षित के जन्म-जन्मान्तर की संचित पुण्यराशि के कारण वे उनके पास आठ दिन रुके और उन्होंने परीक्षित को संपूर्ण भागवत कथा सुनाई। उन्होंने पिता की लिखी कथा को संस्कारित और विस्तारित भी किया।

जीवन साफल्य

पृथ्वी पर अनिर्बध रूप से संचार करना और जहाँ-तहाँ श्रीमद्भागवत की कथा सुनाना ही उनका जीवन कार्य बन गया। उसे वे तत्परता से करते रहे।

एक बार जब वे हिमालय में भ्रमण कर रहे थे तब उनकी नारद से भेंट हो गई। नारदजी ने उन्हें उपदेश दिया। उनकी विरक्ति बढ़ गयी। वे हिमालय के उच्च शिखर पर चढ़ने लगे। वे कैलास पर्वत के पृष्ठ भाग पर जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने ध्यान धारण के लिये सुयोग्य स्थान ढूँढा। सूर्योदय के समय वे पूर्वाभिमुख होकर बैठे और हाथ जोड़कर ध्यान करने लगे। वह सम्पूर्ण परिसर निर्जन था, शांत था, और शुक के लिये सर्वथा अनुकूल था। अपने योग सामर्थ्य से शुक अपनी शक्तियों को जुटाने लगे और ऊपर चढ़ाने लगे। मोक्ष प्रतिबंधक चारों गुण अर्थात (१) वितर्क (२) विचार (३) आनंद (४) अस्मिता उन्होंने त्याग दिये और वे चिदाकाश में विहार करने लगे। दुर्गम शिखर उन्होंने लीलया पर किये। तब वनसावी जनों ने, ऋषि-मुनियों ने, यक्ष गंधर्व तथा देवों ने उनका जय जयकार किया। धन्य है यह शुक जी, ऐसे सबके मुखों से उद्गार निकले, उपर चढ़ते—चढ़ते वे अन्तरिक्ष में पहुँचे और अदृश्य हो गये। उनकी अंतरात्मा परमात्मा में विलीन हो गई।

मत्स्य तथा विष्णु पुराणों में शुक के वैवाहिक जीवन का उल्लेख मिलता है। उन्होंने बर्हिषद की कन्या पीवरी से विवाह किया था। उनके कृष्ण, गौरप्रथ, शंभु, भरिश्रुत तथा जय नाम के पाँच पुत्र हुए। उनकी कन्या का नाम कृत्वी था उसका विवाह उन्होंने नीपराजा से किया।

गृहस्थ जीवन में भी उन्होंने कृष्ण कथा प्रवचन का अपना व्रत अबाधित चलाया था। उनका संपूर्ण जीवन कृष्णमय रहा। अंत में उन्होंने कृष्ण चरणों में शरण ली और वे कृष्ण में ही विलीन हो गये।

मातृ विभूति

रानी दुर्गावती

• कृष्णानन्द सागर

रानी दुर्गावती अद्‌भुत रण—कौशल, वीरता और शक्ति की प्रतिमूर्ति थी। वे महोबा के राजा चन्देल सिंह की पुत्री तथा मण्डला नरेश दलपति सिंह की पत्नी थीं। राजा दलपति सिंह अत्यन्त वीर तथा चतुर राजनीतिज्ञ थे। इसलिए जब तक वे जीवित रहे, तब तक अकबर की हिम्मत उनसे युद्ध छेड़ने की न हुई। लेकिन जैसे ही दलपति सिंह स्वर्ग सिधारे, अकबर ने एक बड़ी सेना आसफखाँ के नेतृत्व में मण्डला पर चढ़ाई करने को भेज दी।

पति की मृत्यु के बाद रानी दुर्गावती ने शासन की बागडोर स्वयं संभाल ली थी, क्योंकि उसका पुत्र नारायण अभी छोटा था। प्रजा पालन के साथ साथ नारायण की उचित शिक्षा-दीक्षा की ओर उसका विशेष ध्यान था। प्रजा उसकी उत्तम शासन-व्यवस्था से प्रसन्न थी। इसी बीच आसफखाँ ने मण्डला को आ घेरा। उसने सोचा था कि दुर्गावती तो स्त्री है, उसे तो वह चुटकी में ही उखाड़ फेंकेगा और बात की बात में ही उसके सारे राज्य पर अधिकार कर लेगा। लेकिन दुर्गावती तो सचमुच में दुर्गा की अवतार थी। उसने अपनी सेना एकत्र की और मुगल फौज पर टूट पड़ी। अपनी सेना का वह स्वयं नेतृत्व कर रही थी। रानी को स्वयं लड़ते हुए देखकर सैनिक दुगुने उत्साह से लड़ने लगे। कुछ ही देर में मुगल फौज के पैर उखड़ गए। आसफखाँ को पराजित होकर लौटना पड़ा। आसफखाँ ने बारह वर्षों में कई बार मण्डला पर आक्रमण किया, किन्तु हर बार उसे मुँह की खानी पड़ी।

कलियुगाब्द ४६६६, सन् १५६४ में अकबर ने उसे पहले से भी बड़ी सेना देकर भेजा। बार-बार के युद्धों में मण्डला की सेना काफी कम रह गई थी। भीषण युद्ध शुरू हो गया। युवा राजकुमार के पराक्रम को देख मुगल दंग रह गए। मुगलों ने दो बार धावे किए, दोनों ही बार राजकुमार ने उन्हें पीछे हटने को मजबूर कर दिया। तीसरी बार

आसफ ने बहुत ही प्रबल आक्रमण किया। इसे राजकुमार रोक न सका। चारों ओर से शत्रु उसके ऊपर टूट पड़े। नारायण बुरी तरह से घायल होकर घोड़े से नीचे गिर पड़ा। कुछ ही दूरी पर रानी भी युद्धरत थी। बेटे को नीचे गिरते देख वह भूखी शेरनी की भाँति शत्रु दल पर टूट पड़ी। उसके साथ उस समय केवल तीन सौ सैनिक थे। सामने समुद्र की तरह ठांठे मारती मुगलों की अथाह सेना थी। फिर भी रानी घबरायी नहीं। उसके दोनों हाथों में तलवारें थी। वह विद्युत वेग से तलवारें चलाते हुए शत्रुओं की गर्दनों को उड़ा रही थी। वह एक हाथ की तलवार सामने वाले शत्रु के सीने में भोंकती, तो दूसरे हाथ वाली तलवार से सामने वाले शत्रु की गर्दन को उड़ा देती। कब उसका हाथ ऊपर उठा और कब उसकी तलवार शत्रु के सीने में जा घुसी, इसका पता ही नहीं चलता था। आज वह रण-चण्डी बनी हुई थी। जो भी उसके सामने आया, सीधा यमलोक पहुंच गया।

लेकिन यह सब कब तक चलता। वह काफी घायल हो चुकी थी। तभी एक बाण उसकी आँख में आ घुसा, जो निकालने पर भी निकला नहीं। फिर भी वह लड़ती रही। शरीर से काफी रक्त निकल चुका था। वह अशक्त होने लगी। आँखों के आगे अंधेरा सा छाने लगा। विजय की आशा समाप्त हो गई। लेकिन उसका संकल्प था कि जीते-जी शत्रु के हाथ में नहीं पड़ूंगी। अत: उसने कमर से कटार निकाली और अपने ही वक्ष में झोंक ली। उसका निष्प्राण शरीर धरती पर गिर पड़ा।

वाह दुर्गावती वाह! तेरी आन, तेरी शान, और तेरा बलिदान युगों-युगों तक भारतवासियों को प्रेरणा देता रहेगा। तेरी यशोगाथा किसी कवि ने इन पंक्तियों में लिखी है—

जब दुर्गावती रण में निकली, हाथों में थी तलवारें दो।
धरती काँपी आकाश हिला, जब चलने लगी तलवारें दो।।
गुस्से से चेहरा ताम्बा था, आँखों से अंगार निकलते थे।
उन गोरे-गोरे हाथों में, जब चमक उठीं तलवारें दो।।

जागृति प्रकाशन,
एफ—१०९, सैक्टर—२७,
नोएडा (उ०प्र०)

विविधा

कुल्लू के कोट एवं दुर्ग

• डॉ० सूरत ठाकुर

गांव कोठी तथा रियासत की सुरक्षा के लिए कुल्लू में राणाओं, ठाकुरों से लेकर राजाओं ने स्थान-स्थान पर कोट एवं गढ़ बनवायें हैं। कोट एक से लेकर पंद्रह बीस मंज़िल तक लकड़ी और पत्थर से चिने हुए किले की तरह होते थे। इन्हें कोठी भी कहा जाता रहा है। कोट की आखिरी मंज़िल चौंतड़ा कटे हुए पत्थरों से चौकोर रूप में बनाया जाता है। उसके ऊपर काठकुणी शैली में आवश्यकता के अनुसार एक से दस मंज़िलों के चौकोर कमरे को चिना जाता है। प्रथम मंज़िल से लेकर दीवारों की लम्बाई चौड़ाई समान रहती है। काठकुणी शैली में चिनाई लकड़ी की शहतीरों और कटे हुए पत्थरों से की जाती हैं। चारों दीवारों में दो-दो शहतीरें लगाई जाती हैं। आमने-सामने की दीवारों की शहतीरें दाईं-बाईं शहतीरों के ऊपर रखी जाती हैं। यही क्रम लगातार छत तक चलता है। शहतीरों के बीच में घड़े हुए पत्थरों से चिनाई की जाती है। कमरों में चारों ओर छोटे-छोटे झरोखे रखे जाते हैं ताकि शत्रुओं पर नज़र रख कर अन्दर से बाहर को बंदूक से हमला किया जा सके। आज भी देवी देवताओं के भण्डार कोट शैली में बने हुए मिलते हैं। जिनमें देवी देवताओं का सारा सामान रखा रहता है।

गढ़ प्राय: ऊंचे टीले पर बनाये जाते थे जहां से चारों ओर नज़र रखी जा सके। गढ़ तक पहुंचने के लिए अधिकतर एक ही रास्ता होता था। हर गढ़ में लकड़ी के बड़े-बड़े ठेले, गोल पत्थरों को संग्रहित करके रखा जाता था ताकि जब कोई शत्रु आक्रमण करे तो इन ठेलों और पत्थरों द्वारा प्रहार करके दुश्मन को मारा या भगाया जा सके। गढ़ की रक्षा करने वाले को गढ़िया कहा जाता था। कोटकंढी में देवता पंजवीर की सुरक्षा में आज भी गढ़िया खानदान के लोग नियुक्त रहते है जो भादों मास में देवता के मंदिर में भोग तथा दीया जलाने के लिए पूरी कोठी के प्रत्येक घर से आटा तथा घी इकट्ठा करते हैं और अंधेरा होने पर मंदिर में दीप प्रज्ज्वलित करते हैं। कुल्लू में स्थान-स्थान पर राणाओं, ठाकुरों तथा राजाओं ने गढ़ एवं कोट बनवाये हैं। जिनमें कई तो ध्वस्त हो चुके हैं। कई

जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं। केवल कुछ ही गढ़ एवं कोट सही स्थिति में बचे हैं।

जिले में सबसे महत्वपूर्ण तथा सही स्थिति में नग्गर का कोट है। नग्गर गांव राजा विशुद्ध पाल से राजा जगत सिंह के समय तक लगभग १४०० वर्षों तक राजाओं की राजधानी रहा। नग्गर समुद्र तल से १६०० मीटर की उंचाई पर स्थित है। नग्गर कोट का निर्माण राजा सिद्धसिंह ने करवाया था। इसके निर्माण में प्रयुक्त पत्थर गढ़—ढेक तथा बड़ागढ़ से लाये गये थे। इन्हें लाने के लिए बड़ागढ़ से लेकर नग्गर तक इतने मज़दूर लगाये गए थे जिससे बड़ागढ़ से नग्गर तक एक लम्बी पंक्ति बन गई। इस पंक्ति के माध्यम से सारे पत्थर हाथों हाथ नग्गर पहुंचाये गए।

नग्गर कोट जिसे अब नग्गर कैसल भी कहते हैं, में तीन मंज़िलें हैं। इसमें शहतीरों के सिरों पर शेर और अन्य जानवारों की आकृतियां खुदी हुई हैं। कहते हैं कि कर्नल हे ने राजा ज्ञान सिंह से इस दुर्ग को ४०० रूपये तथा एक बंदूक देकर खरीदा था। उसके बाद यह कई सालों तक अंग्रेज शासकों का कार्यालय रहा। १९७८ ई० में इसे होटल बना दिया गया। आजकल यह हिमाचल प्रदेश पर्यटन निगम द्वारा संचालित है। दो वर्ष पूर्व ही इसका जीर्णोद्धार हुआ है।

इस के पास ही देवताओं ने मधुमक्खियों का रूप धारण कर मनाली के पास द्राम ढौग से बहुत बड़ा स्लेट काट के लाकर जगती शिला स्थापित की है जिसे जगती पौट कहते हैं । इसे ठारह करडू का पौट भी कहा जाता है। यह आकार में ५ इंच मोटा ८ इंच लम्बा तथा ६ इंच चौड़ा है। इसे सभी देवी-देवताओं का स्थान एवं सिंहासन माना जाता है। जब कभी देवी देवताओं को देश या समाज पर विपत्ति आने की संभावना नज़र आती है तो देवता ठारह करडू के मुख्य कारदार राजा कुल्लू को जगती पूछ करवाने का आदेश देते हैं। राजा कुल्लू जो कि रघुनाथ का छड़ीवरदार होता है जिले के सभी देवी-देवताओं के गूरों व पुजारियों को घण्टी तथा धड़छ के साथ आने के लिए आमंत्रित करता है और निश्चित दिन सभी देवी-देवता यहां आकर जगती के माध्यम से समस्या का समाधान ढूंढने का प्रयास करते हैं।

नग्गर के सामने बड़ागढ़ को जो भोसल राणा के देहांत के बाद सुकेत राज्य के अधीन था, को सिद्ध सिंह ने एक महिला की सहायता से जीता था। यह किला मज़बूत था। टीटा महता नामक बज़ीर ही इसका प्रबन्ध देखता था। बड़ागढ़ में सरजू नाम की एक बांढी (निस्संतान) महिला रहती थी। राजा ने उसे पर्याप्त ईनाम का लालच देकर अपने साथ मिलाया था। उससे जान लिया था कि दुर्ग की रक्षा में सारी सेना दो प्रविष्टे ज्येष्ठ को कोठी हुरंग के पोली गांव में कापू मेला देखने जाती है। सरजू ने राजा को कहलवा भेजा

था कि जब सेना मेला देखने जा चुकी होगी तो वह दुर्ग में लाल कपड़ा पहरा कर संकेत दे देगी। दो जेठ के दिन राजा ने अपनी सेनाएं गढ़ के समीप मोरडुघ में छुपा लीं। जब सुकेत की सेना कापू मेला देखने गई तो उसने लाल कपड़ा फहरा दिया। संकेत मिलते ही राजा की सेनाओं ने बड़ागढ़ दुर्ग को चारों ओर से घेर लिया और दुर्ग पर अपना अधिकार जमा लिया। यह भी माना जाता है कि जब सरजू बांढी ने राजा से ईनाम मांगा तो राजा ने उसे किलटे में बांध कर उसे ढलान से नीचे फिंकवा दिया जिससे उसकी मृत्यु हो गई।

नग्गर के बाद कुल्लू के राजाओं ने मकड़सा में भी महल व कोट बनवाये थे। एक लामण की इन पंक्तियों से मकड़सा के बारे में वर्णन हुआ है—

राणा ठाकुर मारे केरू भुड़ासा,
मकरहाड़ वेशिया, राज बणू मकड़सा।
एक अन्य लोकगीत में मकड़सा के बारे में इस प्रकार उल्लेख हुआ है—
कुल्लू मोंझै मकड़सा मण्डी मोंझै टकोली
फूल निंबरू फुलिया डेंठलू हेरिया रोली।

कहा जाता है कि महाभारत काल में विदूर ने यहां पर राज्य किया था। उनके दो पुत्र थे जिसमें एक का नाम मकड़ तथा दूसरे का नाम भोट था। भोट लाहुल की ओर चला गया और वहां का शासक बना तथा कि मकड़ ने कुल्लू में अपना राज्य स्थापित किया। उसे वर्तमान हुरला थरास के पास की समतल जगह बहुत पसंद आई और उसने उस स्थान पर अपने नाम से राजधानी बनाई। मकड़सा या मकराहड़ के नाम से प्रचलित इस स्थान में आज भी महल तथा कोट के भगनावशेष दिखाई देते हैं। कहा जाता है कि मकराहड़ बहुत बड़ा कस्बा था जो बोशाधार तक फैला हुआ था। इसका वर्णन देव भारथा में मिलता है—

वोशै री बराली छापरा होंडिया हाटा पुजा ती,
हाटै री बराली छापरा होंडिया वोशै पुजा ती।

कालान्तर में राजा बहादुर सिंह ने भीतरी सिराज तथा बाहरी सिराज पर नज़र रखने के लिए पुराने मकड़सा को बसाकर दोबारा से अपनी राजधानी बनाया।

बंजार घाटी में उपमण्डल मुख्यालय बंजार से तीन किलोमीटर ऊपर उत्तर की ओर एक दस मंज़िला कोट विद्यमान है। इस कोट को ढाढ ठाकुर ने बनवाया था। उसकी पत्नी का नाम चैहणी था। अत: उसने इसे अपनी पत्नी को समर्पित करते हुए इसका नाम चैहणी कोट रखा। शुरू में यह कोट पंद्रह मंज़िल का था। १९०५ के भूकंप में पांच मंज़िलें गिर गई और दस मंज़िलें ही बच पाईं। ढाढिया ठाकुर इस कोट में बंदूकें तथा तीर

प्राचीन चैहणी कोट ढाढ ठाकुर द्वारा निर्मित

कमान आदि अस्त्र–शस्त्र रखाता था। इसके अन्दर से ही अपने दुश्मनों पर वार किया करता था। रूपी के ठाकुरों को जीतने के बाद बहादुर सिंह ने ढाढिया ठाकुर पर हमला किया था जिसमें ढाढिया ठाकुर मारा गया था। यह कोट अभी भी मौजूद है। आजकल इसकी दसवीं मंज़िल में जोगणियों की मूर्तियां रखी गई हैं। इसके साथ बना पांच मंज़िला एक अन्य कोट है जिसमें अभी भी ढाढिया ठाकुर के वंशज अपना सामान रखते हैं।

रूपी और सिराज के ठाकुरों और राणाओं को जीतने में सैंज घाटी के धलियारा गांव के हठी सेनानायक ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। राजा ने उससे खुश होकर धलियारा में ७२ खार तथा शासन में ३६० खार भूमि ईनाम के तौर पर दी थी। सेनानायक हठी ने धलियारा के पास दो कोट बनवाये हैं। ये कोट आज भी सही स्थिति हैं।

इसी तरह तुंग के कोट और गढ़ का निर्माण भी उसी ने करवाया था। तुंग गढ़ बशलेऊ जोत के पास सामरिक महत्व का गढ़ रहा है। इस दुर्ग से नीचे घने जंगल हैं और चलने के लिए तंग रास्ता है जिसमें बड़ी मुश्किल से एक ही व्यक्ति चल सकता है। जब सिक्खों ने बाहरी सिराज पर हमला किया और राजा बंदी बना लिया था तो लोगों ने कपूरू बज़ीर की योजनानुसार तुंग के पास लुढ़काने के लिए बड़ी-बड़ी लकड़ियों के ठेले तथा पत्थर इकटठा करके रखे थे। जब बशलेऊ पास के लिए सिख सेना राजा को बंदी बनाकर उसके साथ चली तो सभी लोग तथा सैनिक अलग-अलग स्थान पर छुप गये। जैसे ही राजा अजीत सिंह की पालकी धार के पास पहुंच गई तो गोरिल्ला युद्ध करते हुए लोगों ने सिख सैनिकों पर आक्रमण कर दिया। राजा को सुरक्षित छुड़ा लिया गया। तत्पश्चात् गुजू नामक बाजा बजाकर सभी लोगों को सूचना दी गई। संकेत के मिलते ही कुछ लोगों ने जंगल में आग लगा दी, कुछ ने नाले पर बनी पुलिया तोड़ दी तथा कुछ ने ऊपर गढ़ से बड़ी-बड़ी लकड़ी के ठेले तथा पत्थर बरसाने शुरू किये। सिख सैनिक रास्तों से अनजान थे सो इधर-उधर भागने लगे और भागते-भागते गहरी खाई में गिर कर मरने लगे।

धारा देहुरा के बनोगी का कोट शैंशर के हूल ठाकुर ने बनवाया था। ये कोट अभी भी मौजूद है। कहा जाता है कि हूल ठाकुर को कुल्लू का राजा अपने आधिपत्य में करना चाहता था। राजा ने आक्रमण करके उसे बंदी बनाकर रामपुर जेल भेजा था। हूल ठाकुर मनु ऋषि का परम भक्त था। उसने मनु महाराज से विनती की कि वह शैंशर में उसका मंदिर बनवाएगा अगर ऋषि उसे छुड़वाने में मदद करेगा। मनु महाराज ने उसकी पुकार सुनी और जेल में मधुमक्खी के रूप में प्रकट होकर उसे कारागार से छुड़वाया था। धारादेहुरा आने पर उसने कोट के साथ ही धार पर मनु ऋषि का मंदिर बनवाया था।

मलाणा के पास एक ऊंचे टीले पर गिरूआ कोठी स्थित है। लाल चंद प्रार्थी ने कुलूत देश की कहानी में पृष्ठ २७४ पर लिखा है, 'महाभारत में पाण्डवों की हिमालय यात्रा में वृष पर्वा, अर्ष्टिखेण और कुबेर के आश्रमों का वर्णन आता है। अर्ष्टिखेण का अपभ्रंश शायद चंद्रखणी होगा और उसी क्षेत्र में कुबेर का मंदिर भी स्थित है जिसे गिरूआ कोठी कहते हैं। गिरूआ कोठी ग्रीवा कोटी का ही अपभ्रंश शब्द है और इसके बारे में मशहूर है कि इस पर्वत के अन्दर सोने के महल हैं।' गिरूआ कोठी के आसपास लम्बी चौड़ी चरागाहें हैं जिनमें गर्मी के मौसम में गद्दी और पुहाल भेड़ बकरियां ले कर पहुंचते हैं। पुहालों का कहना है कि उन्होंने कई बार गिरूआ कोठी की चोटी पर जाने की कोशिश की परन्तु जैसे-जैसे वे ऊपर चढ़ते हुए कोट के समीप पहुंचते तो भरी दोपहरी में अंधेरा हो जाता । जिस कारण आगे का रास्ता दिखाई देना बंद हो जाता है। इसलिए गिरूआ कोठी आज भी एक रहस्य ही बनी हुई है। पुहाल अपनी रेवड़ की रक्षा हेतु प्रतिवर्ष इसके सामने मेमना भेंट करते हैं।

रोहतांग के पार्श्व में एक गांव के पास मंजनकोट है। यहां कुल्लू के राजा नारद पाल की चम्बा के राजा के साथ लड़ाई हुई थी। कहते हैं कि यह लड़ाई बारह वर्षों तक चलती रही। अंततः बारह वषों के बाद कुल्लू के राजा के पक्ष में फैसला हुआ था। इस खुशी में काठी गांव में जश्न मनाया गया। इसमें गद्दी सेना को भी आमंत्रित किया गया। गांव जाने के लिए व्यास के ऊपर से होकर एक पुल से गुज़रना पड़ता था। पुल के नीचे बहुत गहरी खाई थी। कुल्लू के सैनिकों तथा गांव वालों ने एक षड्यंत्र के तहत पहले तो गद्दी सेना को सूर (कोदा अन्न की मदिरा) पिलाई। उनके आने से पहले पुल पर से तखते हटा दिए गये और उनके स्थान पर भांग की सूखी डालियां बिछाई गईं। गांव में ढोल-नगाड़ों को बजाया गया। सुरापान करने के बाद गद्दी सिपाही पुल पार करने लगे तो वे निकाले गए तखतों के स्थान पर बिछी भांग पर से गहरी खाई में गिरते गये। ढोल-नगाड़ों की आवाज़ के कारण उनकी चीखें पीछे वाले सैनिकों को सुनाई नहीं दे रही

थी। उनके साथ भी एक ढोल वाला बजंतरी था। जब वह ढोल वाला पुल से नीचे गिरा तो ढोल की आवाज़ सुनकर पीछे वाले सिपाही चौंक गये। वे पीछे को हट गये परन्तु पीछे कुल्लू के सैनिक तैयार बैठे थे, उन्होंने एक-एक करके उन सब गद्दी सिपाहियों को मार डाला।

एक समय यह कोट झीणा राणा के अधीन भी रहा है। कुल्लू के राजा सिद्ध सिंह ने तुलसू मुछियाणी की मदद से झीणा राणा को शनाग गांव में मरवाया था। कहते हैं कि झीणा राणा गर्मियों में मंजनकोट तथा सर्दियों में मनाली गढ़ में रहता था। सिद्ध सिंह के कहने पर तुलसू मुछियाणी ने कमाणु तथा रामवन के खेतों में काम देख रहे झीणा राणा को छिप कर तीर चलाया था जो उसकी रान पर लगा और वह उसी अवस्था में घोड़े पर सवार होकर मंजनकोट की ओर भागा था। वह प्यास से बेहाल वराकोट के चश्में पर पानी पीने के लिए रूका और वहीं उसकी मौत हो गई। घोड़ा जब उसके बिना ही मजनकोट पहुंचा तब रानियों को उसकी मौत का पता चला। उसकी एक गर्भवती रानी को छोड़कर सभी रानियां उसी के साथ सती हुई थी। झीणा राणा की गर्मियों की राजधानी मनाली में छोटे-छोटे दुर्ग के खण्डहर अभी भी देखे जा सकते हैं।

बाहरी सिराज के पंद्रहबीस कोट को कुल्लू के राजा मानसिंह ने राजा बुशहर से जीता था। कालगढ़ को राजा मान सिंह ने ही बनाया था। उसने श्रीकोट तथा सलचानी में भी गढ़ स्थापित किये थे।

रूपी वादी में कोटकंढी के पास वोशाधार पर वोशे के ठाकुर का राज था। जिसका किला कोटकंढी में एक ऐसे स्थान पर है जहां से चारों ओर का दृश्य दिखाई देता है। आज भी इसके अवशेष यहां पर विद्यमान हैं। इसकी बाईं तरफ पंजवीर का मंदिर व स्थान है। इस किले के पास ही एक पत्थर पर पानी का कुंड है जो हर समय पानी से भरा रहता है। कहते हैं कि वोशा के ठाकुर को जब राजा बहादुर सिंह ने हराकर अपने दरबार में लाया तो उसने तुरन्त राजा की अधीनता स्वीकार कर ली। परन्तु जैसे ही वह अपने स्थान पर गया तो उसने राजा की अधीनता स्वीकार करने से मना कर दिया। जिससे राजा उस पर क्रोधित हुआ। उसे पकड़कर बशोणा नामक स्थान पर लाया गया। बशोणा में आकर उसने पुन: राजा की अधीनता स्वीकार की। तब राजा ने वोशा की मिट्टी मंगवाकर उसके नीचे बिछा दी तो उसने उस पर बैठते ही राजा की अधीनता स्वीकार करने से मना कर दिया। राजा समझ गया कि यह वोशा ठाकुर का कसूर नहीं है। यह वोशे की मिट्टी का ही गुण है जिससे वोशा ठाकुर उसकी अधीनता स्वीकार करने से मना करता है। आज भी कुल्लू राजपरिवार के सदस्य वोशा नहीं जाते। कोटकंढी के दुर्ग तथा पंजवीर के मंदिर

जाने के लिए नरोगी होकर रास्त अपनाते हैं। कोटकंडी से नीचे छयोंर के दुर्ग के अवशेष भी अभी मौजूद हैं। इस दुर्ग को छयोंर के राणा ने बनवाया था। इस दुर्ग को राजा बहादुर सिंह ने जीता था।

कोटकंढी के दुर्ग को जीतने के बाद राजा बहादुर सिंह ने तांदी पर विजय पाई थी। तांदी के ठाकुर के पास जमसेढ़ तथा धर्मपुर में दो दुर्ग थे। जमसेढ़ के दुर्ग पर राजा ने अपनी सेना तैनात की थी और धर्मपुर का दुर्ग गिरा दिया था।

सुलतानपुर से चार पांच किलोमीटर ऊपर पश्चिम में सारी गढ़ विद्यमान है। मानसिंह की लड़ाई जब रामपुर बुशहर के राजा के साथ हुई थी तो कुल्लू की सेना की जीत हुई थी। इसका वर्णन एक बीर गाथा में हुआ है जिसमें सारी गढ़ का उल्लेख मिलता है। यथा:—

ब्शहरी गढ़ा बाज़ी काहली, सारी गढ़ा नगारा,
राजा रानी बेढ़ा न, चेक ढाल तलवारा।

लग क्षेत्र में १६३७ ई० तक जोग चंद का शासन था। राजा जगत सिंह ने गद्दी पर बैठने के बाद लग पर आक्रमण किया। अपने साथ कुछ सेना लेकर राजा सारीगढ़ पर विजय पाने के लिए निकला तो उसकी सेना को देख खेत में काम करती हुई एक महिला ने राजा को लामण गीत गाकर सचेत किया था—

सारी मौत मादा राजेया, सारी देली पतारी
शोजागढ़ भेड़ला राजेया, सारी लौग तैं मारी।।

अर्थात् सारी गढ़ पर आक्रमण करना फायदेमंद नहीं होगा अगर तुम लग के मज़बूत गढ़ शोजा पर हमला करोगे तो तुम्हारी जीत पक्की होगी। राजा ने उस महिला के संकेत के अनुसार पहले शोजागढ़ पर ही आक्रमण किया। शोजागढ़ लग घाटी के खणी पांधे गांव के पास चोटी पर स्थित है। इसी गढ़ में जोगचंद ने अपना शस्त्र भंडार रखा हुआ था। इस गढ़ के अवशेष आज भी यहां एक दीवार तथा कुछ पत्थरों के ढेर के रूप में पड़े हैं। लग क्षेत्र में ही भलियानी गांव से ऊपर कुल्लू और मण्डी के सीमा पर की एक ऊंची चोटी पर तारापुर गढ़ स्थित है। कायस धार से दक्षिण-पश्चिम की तरफ ७ किलोमीटर की दूरी पर तारापुर गढ़ के पुराने अवशेष अभी भी मौजूद हैं। किसी समय यह गढ़ बड़ा मशहूर था। कभी यह कुल्लू राजा के कब्ज़े में रहा तो कभी मण्डी के राजा के कब्ज़े में। लग में ही मण्डल गढ़ स्थित हैं जिन्हें लग के शासकों ने बनवाया था। मानगढ़ को राजा मान सिंह ने बनवाया था। राजा मानसिंह ने पंद्रह बीस कोठी में डांगा, बुचका तथा गामू के गढ़ बनवाये। इसके साथ-साथ तीर्थन घाटी में श्रीकोट में भी दुर्ग बनवाया।

समुद्रतल से १०२०० फुट की ऊंचाई पर जलोड़ी जोत के दायीं तरफ तीन किलोमीटर के फासले पर रघुपुर में एक गढ़ जीर्ण-शीर्ण अवस्था में विद्यमान है। आजकल यहां पर नाग देवता का एक मंदिर बनवाया गया है। यह एक उंचे स्थान पर अवस्थित है। यहां से कुल्लू सिराज, मण्डी सिराज तथा बाहरी सिराज का क्षेत्र दिखाई देता है। कहते हैं कि इसे मण्डी के राजाओं ने बनवाया था। इस पर कलियुगाब्द ४८२१, ईस्वी सन् १७१९ तक मण्डी के राजा का अधिकार था। कुल्लू के राजा राजसिंह ने इस पर अधिकार जमाने के लिए आक्रमण करके इस दुर्ग को चारों ओर से घेर लिया। दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ। राजसिंह के पास महाराजा कोठी के सैनिक थे जो गुरिल्ला युद्ध तथा ढींग से पत्थर फैंकने में माहिर थे। वे जान पर खेलकर गढ़ के भीतर कूद गये और वहां तीन दिन तक लड़ते रहे। कुल्लू के सैनिकों की कैसे जीत हुई। इस बारे में कहा जाता है कि युद्ध में ढींग से पत्थर फैंकने वाले दोनों ओर से कुल्लू के थे। बाप मण्डी सेना के पक्ष में लड़ रहा था और बेटा कुल्लू सेना के पक्ष में। पिता की सहानूभूति कुल्लू वालों के साथ थी। इसलिए उसने अपने बेटे को एक लामण के माध्यम से संदेश दिया कि यदि मैं तुम्हारी तरफ होता तो दो हाथ काटकर मारता। लड़का उसका इशारा समझ गया। उसने दो हाथ दूरी काटकर निशाना लगाया और उसका निशाना ठीक लगने लगा। जिससे मण्डी सेना परास्त हुई और गढ़ कुल्लू के अधिकार में आया। इसमें कोठी महाराजा के बहुत सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए थे। यह गढ़ जीतने की महाराजा के सैनिकों की वीर गाथा आज भी लोक गीतों में गाई जाती है—

गढ़ जित्तु महाराजुयै,
शौठ पौई मराराजु री रोंडी।

अर्थात् गढ़ महाराजा के सैनिकों ने जीत लिया, परन्तु इससे महाराजा के साठ सैनिकों की पत्नियां विधवा हो गईं। साठ संख्या यहां निश्चित साठ नहीं, लेकिन बहुत अर्थ में प्रयुक्त है। इस दुर्ग में पानी की बावड़ी अभी भी मौजूद है। सिपाहियों की बैरकें अभी भी खण्डहरों में देखी जा सकती हैं। प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से भी यह स्थान अत्यन्त रमणीय है।

यद्यपि आज अधिकांश कोट व गढ़ जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। इनके अवशेष मात्र ही दिखाई देते हैं। फिर भी ये शोधार्थियों तथा पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करने में सक्षम हैं। अगर इनकी मुरम्मत की जाये और इन तक आने जाने की समुचित व्यवस्था करवाई जाये तो पर्यटन को बढ़ावा देने में ये महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

प्रवक्ता राजकीय महाविद्यालय
कुल्लू हि० प्र०

त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद

अलंकार मार्तण्ड महाराजा संसार चंद और उनका युग

हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिला की प्रसिद्ध नगरी सुजानपुर टीहरा में ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान समिति हिमाचल प्रदेश ***"अलंकार मार्तण्ड महाराजा संसार चन्द और उनका युग"*** विषय पर कार्तिक शुक्ल १३, १४, १५ कलियुगाब्द ५१११ (ईस्वी सन् ३१ अक्तूबर, १, २ नवम्बर २००९) को त्रि–दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद आयोजित कर रहा है।

इस राष्ट्रीय परिसंवाद में विशिष्ट अतिथि के रूप में मंगोलिया के राजदूत माननीय वोरो शिलोव ऐंखबोलड विशेष रूप से तीनों दिन परिसंवाद में रहने वाले हैं। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष माननीय राज्यसभा सदस्य श्री शान्ता कुमार जी तथा मुख्यातिथि हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमन्त्री प्रो० प्रेम कुमार धूमल जी, माननीय शिक्षा मन्त्री श्री ईश्वर दास जी धीमान तथा राजा आदित्य देव कटोच का सान्निध्य इस परिसंवाद में देश भर से आए हुए विद्वानों को प्राप्त होने वाला है।

महाराजा संसार चन्द का काल भारतीय इतिहास में महत्त्वपूर्ण रहा है। उनके जीवन पर विद्वानों ने काफी काम किया है। तो भी और अधिक काम किया जाना अपेक्षित है। इस परिसवांद में विद्वानों द्वारा प्रस्तुत शोध-पत्रों के माध्यम से उनके कार्य एवं उनके जीवन के अनछुए पृष्ठ समाज के सामने आने वाले हैं।

कुंज बिहारी जालान वाकणकर पुरस्कार से सम्मानित

गत १९ सितम्बर २००९ को नई दिल्ली में प्रसिद्ध इतिहासकार एवं लेखक श्री कुंज बिहारी जालान को १२वें डॉ० विष्णु श्रीधर वाकणकर पुरस्कार (राष्ट्रीय पुरस्कार) से सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप उन्हें शाल, श्री फल एवं ५१ हजार रूपए की राशि पूर्व सासन्द श्री बैकुण्ठ लाल शर्मा 'प्रेम' ने भेंट की। यह पुरस्कार श्री बाबा साहेब आप्टे स्मारक समिति, दिल्ली द्वारा प्रतिवर्ष एक ऐसे विद्वान को दिया जाता है जिसने देश, संस्कृति तथा राष्ट्रीयता एवं इतिहास के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया हो। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व सांसद महेश चन्द्र शर्मा ने की तथा इस अवसर पर मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक माननीय ठाकुर राम सिंह जी थे।

श्री जालान जी का जन्म १४ अप्रैल १९३० को सीतामढ़ी बिहार में हुआ और अपने जीवन में उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं जिनमें 'सीतावतरण', 'ऐतिहासिक पुरुष चक्रवर्ती सम्राट श्रीराम' बहुचर्चित पुस्तकें हुईं।

सचिव, शोध संस्थान नेरी।

सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान

परिचय : समस्त ग्रामीण समुदाय की सम्पूर्ण स्वच्छता एवं उत्तम स्वास्थ्य प्राप्ति हेतु परस्पर समुदाय सहभागिता से चलाया जा रहा अभियान।

उद्देश्य : जन सहयोग से सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान को जन आन्दोलन के रूप में परिवर्तन करने उपरान्त जिला की समस्त २८३ ग्राम पंचायतों में खुले में शौच से मुक्त एवं स्वस्थ वातावरण का निर्माण।

विशेषताएं :

जन–सहभागिता एवं जागरूकता पर विशेष जोर। पूर्णत: मांग पर आधारित।

अनुदान की समाप्ति। विद्यालयों एवं आंगनवाड़ियों में शौचालयों का निर्माण।

भूतकाल में स्वच्छता के स्तर में सुधार करने हेतु चलाए गए कार्यक्रमों की भान्ति मात्र शौचालय निर्माण पर जोर न देकर स्वच्छता के क्षेत्र में समस्त आधारभूत पहलुओं के विकास एवं उत्थान पर बल।

उपलब्धियाँ :

अब तक जिला की १३ पंचायतों को निर्मल ग्राम पुरुस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। इस वर्ष महर्षि बाल्मिकी सम्पूर्ण स्वच्छता के अंतर्गत जिला के विभिन्न विकास खण्डों की २६ पंचायतों ने भाग लिया जिसमें विकास खण्ड तीसा की भंजराडू, चम्बा की कियाणी, सलूणी की सूरी, भट्टियात की पुखरी, मैहला की लुड्डू, पांगी की मिन्दल खण्ड स्तर पर प्रथम रहीं हैं। पांगी की मिन्दल पंचायत का मुकाबला मण्डल स्तर पर जिला कांगड़ा, ऊना की जिला स्तर पर प्रथम रही पंचायतों के साथ हुआ है। इस वर्ष विभिन्न विकास खण्डों की ४६ पंचायतों को निर्मल ग्राम पुरुस्कार हेतू नामांकित किया गया है। निर्मल ग्राम पुरुस्कार से सम्मानित पंचायतों को सरकार द्वारा एक–एक लाख की राशि का पुरुस्कार दिया गया है।

चिन्तन :

१५ अगस्त को मिली आजादी। खुशी–खुशी जीवन बसर कर रहे हैं। दु:ख है तो बस एक बात का। खुले में मल करके,
भारत को गन्दा कर रहे हैं। भारत मां को मिले पूर्ण सम्मान। सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान – सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान।

नारा :

स्वच्छ रहेंगे, स्वस्थ रहेंगे। सफाई में ही भलाई है।

हस्त:–

परियोजना अधिकारी, जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, चम्बा जिला चम्बा

सफलता की कहानी – सरस व्यापार मेला

गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले ग्रामीण दस्तकारों एवं स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार किए गए ग्रामीण उत्पादों की प्रदर्शनी एवं बिक्री

सरस मेले, ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा की गई एक पहल है जिसका उद्देश्य ग्रामीण निर्धन वर्ग को अपने उत्पादों की बिक्री करने के लिए एक मंच प्रदान करना है और इन मेलों के माध्यम से ग्रामीण निर्धन वर्ग को बाजार की गतिशीलता का परिचय मिलता है और ऐसी अपेक्षा की जाती है कि इस परिचय से उन्हें बेहतर डिजाइन, पैकेजिंग, ब्रांडिंग आदि के जरिए अपने उत्पादों की बिक्री में सुधार लाने में मदद मिल सकेगी। जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, चम्बा को ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय मिंजर मेले के दौरान दिनांक २६.७.२००९ से ६.८.२००९ तक चम्बा के चौगान नं० २ में सरस मेला आयोजित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इस मेले को आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले दस्तकारों को जो कि ग्रामीण विकास मंत्रालय की एसजीएसवाई योजना के लाभार्थी हैं, उनके द्वारा तैयार किए गए उत्पादों की बिक्री और उनका प्रदर्शन करने का एक मौका उपलब्ध करवाना है। जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, चम्बा ने दिनांक २६.७.२००९ से ६.८.२००९ तक चम्बा के चौगान नं० २ में सरस मेले का आयोजन किया जिसमें जिला चम्बा के सातों विकास खण्डों के २२ स्वयं सहायता समूहों व प्रदेश के १६ स्वयं सहायता समूहों के अलावा दूसरो राज्यों जैसे तमिलनाडू, असम, आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा, बिहार, उत्तर प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, हरियाणा व उत्तराखंड के स्वयं सहायता समूहों ने भाग लिया।

राज्यों की सहभागिता और स्टॉलों का आबंटन

जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, चम्बा ने स्टालों के आबंटन सहित राज्य सरकारों को काफी पहले सूचित कर दिया था और उनसे उनकी सहभागिता की पुष्टि करने और सहभागियों की कुल संख्या से संबंधित विवरण भेजने का अनुरोध किया था। राज्यों को इन स्टालों का आबंटन उनकी जरूरत के अनुसार किया गया था और यह एक विशेष रूप से सुनिश्चित किया गया था कि आबंटन निष्पक्ष और पारदर्शी ढंग से किया जाए। इस मेले में १७० से ज्यादा सहभागियों ने अपने उत्पादों को प्रदर्शित एवं विक्रय किया।

सरस मेले के दौरान बिक्री

सरस मेले में खूब बिक्री हुई और मेला खत्म होने तक अनेक सहभागियों का माल समाप्त हो चुका था। इस मेले में कुल बिक्री २६,२२,४७५/– रूपए की हुई।

प्रचार

इस मेले का प्रचार काफी जोर–शोर और लगभग दो माह पहले से कर दिया गया था जिसमें दैनिक समाचार पत्रों, बैनर व पैंफलैट्स के माध्यम मुख्य रूप से थे।

मन्दिर न्यास श्री नयना देवी जी, जिला बिलासपुर हिमाचल प्रदेश

सिद्ध शक्ति पीठ माता श्री नयना देवी जी का मन्दिर उत्तरी भारत का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। यहां पर न केवल भारतवर्ष से परन्तु विदेशों से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं। हर वर्ष यहां पर तीन बड़े मेले चैत्र, श्रावण व आश्विन मास के नवरात्रों में होते हैं तथा साल भर श्रद्धालु माता जी के दर्शनों के लिए भारी संख्या में आते रहते है। मन्दिर न्यास द्वारा यात्रियों की सुविधा हेतु निम्न प्रबन्ध किए गए हैः

1. उपलब्ध सुविधायेंः–

1. मन्दिर परिसर एवं लंगर में आधुनिक तकनीक द्वारा मशीनों से सफाई व्यवस्था का प्रबन्ध किया गया है। 2. बस अड्ड़ा पर आधुनिक यात्री निवास मातृ आंचल में ठहरने की व्यवस्था 4. आयुर्वैदिक औषधालय में निःशुल्क चिकित्सा सुविधा 5.दोनों समय लंगर में निःशुल्क भोजन व नाश्ता 6. धर्मशालाओं में निःशुल्क कमरों का प्रावधान 7. कौलां वाला टोवा से मन्दिर परिसर तक विभिन्न स्थलों पर सुलभ शौचालयों एवं स्नानागार की व्यवस्था 8. मातृ आंचल में वीआईपी कमरों की व्यवस्था 9. मातृ आंचल में कैन्टीन में अच्छा एवं सस्ता खाना उपलब्ध 10. नए बस अड्ड़े पर छोटे वाहन खड़ा करने की सुविधा 11. यात्रियों के सामान रखने के लिए बस अड्ड़े पर क्लाक रूम उपलब्ध 12. श्रद्धालुओं के लिए शुद्ध देसी घी का हलवा न्यास की दुकान पर उपलब्ध 13. संस्कृत महाविद्यालय में निशुःल्क शिक्षा उपलब्ध 14. यात्रियों की सुविधार्थ निःशुल्क कमरे, कम्बल और रजाईयों का प्रबन्ध 15. श्रद्धालुओं की सुविधार्थ मन्दिर के समीप "मातृशरण" भवन का निर्माण 16. श्रद्धालुओं की सुविधार्थ मन्दिर वाले रास्ते में वर्षा शालिकाओं का निर्माण 17. बस अड्ड़ा से मन्दिर तक दोहरे रास्ते का निर्माण 18. मन्दिर के समीप हवाई पुल का निर्माण 19. बस अड्ड़ा के समीप यात्रियों के ठहरने के लिए "मातृ छाया" भवन का निर्माण 20. मन्दिर परिसर में ब्रास रेलिंग लगवाना 21.कौंलां वाला टोवा व मन्दिर श्री नयना देवी जी के क्षेत्र में फ्लड लाईट का लगवाना 22.मन्दिर परिसर में संगमरमर लगवाना।

2. प्रस्तावित योजनाएं :–

1. मन्दिर परिसर का सौन्दर्यकरण। श्री नयना देवी जी के क्षेत्र का मास्टर प्लान बनवाना 2. घघांडल में पार्किंग स्थल का निर्माण 3. मन्दिर के रास्ते में अतिरिक्त शौचालयों का निर्माण 4.कौलां वाला टोवा से श्री नयना देवी जी से सड़क को पक्का करना 5. कौलां वाला टोवा में स्वागत द्वार का निर्माण करना 6. कौलां वाला टोवा में तालाब का सौन्दर्य करण एवं उसमें साफ पानी डालना 7. कौंला वाला टोवा में शौचालय एवं स्नानागृह का निर्माण 8. श्री नयना देवी जी क्षेत्र में पौधरोपण 9. वर्षा का जल संग्रहण, भण्डारण एवं प्रबन्धन 10. सिंह द्वार न०2 के पास हवाई पुल का निर्माण।

अनुपम कुमार
मन्दिर अधिकारी,
मन्दिर न्यास श्री नयना देवी जी
जिला बिलासपुर (हि०प्र०)
दूरभाष–२८८०४८, २८८०२१

विनय सिंह
अध्यक्ष(एस०डी०एम०)
मन्दिर न्यास श्री नयना देवी जी
जिला बिलासपुर (हि०प्र०)
दूरभाष– २२४१९८ (का) २२४७९९ (आवास)

सुश्री नन्दिता गुप्ता
आयुक्त (उपायुक्त)
मन्दिर न्यास श्री नयना देवी जी
जिला बिलासपुर (हि०प्र०)
दूरभाष– २२४१५५ (का) २२४७५०(आवास)

दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें

JASMER PACK

Office & Works :

Plot No. 10, Ind. Area, Kala-Amb - 173 030
Distt. Sirmour (H.P.), India
Ph.: (01702) - 238437, 238367
Fax : (01702) - 238437, 238367
Mobile No. : 98164-00797, 98164-00790